चन्दामामा
मार्च १९९४
Rs 4

PARLE
Parle-G
Par

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form VI), Newspapers (Central) Rules, 1956

1. Place of Publication	CHANDAMAMA BUILDINGS' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras - 600 026.
2. Periodicity of Publication	MONTHLY Ist of each calender month
3. Printer's Name Nationality Address	B.V. REDDI INDIAN Prasad Process Private Limited 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras - 600 026
4. Publisher's Name Nationality Address	B. VISWANATHA REDDI INDIAN Chandamama Publications 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras - 600 026
5. Editor's Name Nationality Address	B. NAGI REDDI INDIAN 'Chandamama Buildings' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras - 600 026
6. Name and address of Individuals who own the paper	CHANDAMAMA PUBLICATIONS PARTNERS : 1. Sri B. VENKATRAMA REDDY 2. Sri B.V. NARESH REDDY 3. Sri B.V. SANJAY REDDY 4. Sri B.V. SHARATH REDDY 5. Smt. B. PADMAVATHI 6. Sri B.N. RAJESH REDDY 7. Smt. B. VASUNDHARA 8. Kum. B.L. ARCHANA 9. Kum. B.L. ARADHANA (Minor) (Minor admitted to the benefits of Partnership) 'Chandamama Buildings' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras - 600 026

I, B Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Ist March 1994

B. VISWANATHA REDDI
Signature of the Publisher

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

परीक्षाओं से भय क्यों?

अधिकतर विद्यार्थी मार्च महीने का नाम लेते ही भयभीत हो जाते हैं, क्योंकि इसी महीने में उनके स्कूलों और कालेजों की वार्षिक परीक्षाएँ होती हैं । कभी-कभी तो ये परीक्षाएँ अप्रैल और मई तक बढ़ायी जाती हैं । परीक्षाओं द्वारा यह निर्णय होता है कि उनकी कक्षोन्नति होगी कि नहीं, उन्हें उपाधि प्राप्त होगी अथवा नहीं?

परीक्षाओं से भयभीत होने की आवश्यकता ही क्या हैऔर क्यों हो? अगर बच्चे सदा अपनी कक्षाओं में ठीक तरह से जा रहे हों, अध्यापकों के भाषणों तथा उनके मार्गदर्शन का लाभ उठा रहे हों, अपने पाठ्य-पुस्तकों को नियमित रूप से पढ़ रहे हों और पढ़े हुए पाठों का सही मनन कर रहे हों, समय-समय पर अध्ययन किये हुए पाठों को दुबारा ध्यान से याद कर रहे हों तो अवश्य ही दृढ़ विश्वास के साथ वे परीक्षाएँ लिखने जाएँगे । उनको परिणाम का भय ही नहीं होगा, क्योंकि वे निश्चित रूप से जानते हैं कि उनका श्रम व्यर्थ नहीं जायेगा ।

जैसे ही बच्चे किसी शैक्षणिक संस्था में प्रवेश करते हैं तो उनको महसूस करना होगा कि विद्यार्थी के रूप में अब उन्हें महत्वपूर्ण पात्र अदा करना है । यह महसूस करने पर वे दिनचर्या और पद्धतियों का अनुसरण सही-सही करेंगे और इसके लिए वे अपने को मानसिक रुप से भी सन्नद्ध रखेंगे । तब कभी भी अनाचार की भावना उनमें जागृत ही नहीं होगी । परीक्षाओं की रुकावट को पार करने के लिए वह धोखे की पनाह में नहीं जायेंगे ।

अनुचित व अन्यायपूर्ण पद्धतियों को अपनाने से वे केवल अध्यापकों को तथा सहपाठियों को ही धोखा नहीं दे रहे हैं बल्कि अपने आप को भी वे धोखा दे रहे हैं । जिस सफलता की आशा में वे ग़लत रास्ते पर चलने लगते हैं, वह रास्ता उन्हें कभी भी सही लक्ष्य की ओर नहीं ले जायेगा । उन्हें अपनी यह ग़लती तब महसूस होगी जब वे ऊँचे कक्षों में जायेंगे या उन्हें भविष्य में बड़ी जिम्मेदारियाँ संभालनी पड़ेंगी ।

अतः धोखा ही क्यों दें? क़सम खाओ कि हम में से कोई भी बेईमान व अविश्वसनीय नहीं होंगे, अपने आपको धोखा नहीं देंगे । अपनी योग्यताओं पर संपूर्ण विश्वास रखो ।

वर्ष : ४७ मार्च १९९४ अंक : ७
एक प्रति : रु. ४/- वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

सामाचार-विशेषताएँ

महामस्तकाभिषेक

कुंभमेला तथा गोदावरी पुष्करों की तरह बाहुबलि का महामस्ताकाभिषेक का महोत्सव भी बारह वर्षों में एक बार संपन्न होता है । हासन जिला कर्नाटक प्रांत में है । वहाँ श्रावणबेलगोला नामक सुप्रसिद्ध स्थान है । वहाँ की इंद्रगरी पहाड़ी पर बाहुबलि की मूर्ति है । एक ही शिला से बनी यह मूर्ति संसार भर में सबसे ऊँची मूर्ति है । ई. स. ९८१ में इस मूर्ति की प्रतिष्ठापना हुई । बीसवीं शताब्दी में सात बार १९००, १९१०, १९२३, १९४०, १९५३, १९६७, १९८१ में ये महामस्ताकाभिषेक संपन्न हुए । इस शताब्दी में संपन्न यह महोत्सव आठवाँ और अंतिम है । यह १९९३ दिसंबर १९ को बहुत ही बड़े वैभव के साथ मनाया गया । प्रतिमा की प्रतिष्ठापना के बाद ८५ वी. बार संपन्न इस महोत्सव में असंख्य भक्तों ने भाग लिया । महोत्सव के कार्यक्रमों का प्रबंध उच्च स्तर पर किया गया । शुभ नक्षत्र ग्रह राशि के अनुसार इस उत्सव का आयोजन किया गया । अतः बारह वर्षों की अवधि में थोड़ा- बहुत भेद अवश्य ही रहा होगा । चौबीस तीर्थकंरों में वर्धमान महावीर अंतिम तीर्थंकर थे । उन्होने ही जैनमत की स्थापना की । प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव राजा थे । उन्होने इहलोक के समस्त बंधनों को त्याग दिया और अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत को अयोध्या सौंपी । द्वितीय पुत्र बाहुबलि को पोदनपुर सौपा । अपने भाई के राज्य को भी हड़पने की दुराशा भरत में जगी । बाहुबलि ने उसका विरोध किया । दोनों सेनाओं के बीच में युद्ध का आरंभ होने ही वाला था कि मंत्रियों ने दोनों भाइयों को रोका और उन्हें समझाया कि इस भयंकर युद्ध से अपार जनता अनावश्यक ही मौत के घाट उतारी जायेगी । दोनों भाइयों को मंत्रियों की यह सलाह सही लगी । इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि युद्ध सेनाओं के बीच में ना हो, बल्कि उन दोनों तक ही सीमित हो और परस्पर युद्ध करके इस निर्णय पर आ जाएँ कि कौन बलवान है और विजय किसकी है? दोनों भाइयों के बीच में मुष्टियुद्ध, जलयुद्ध और मल्लयुद्ध हुए । तीनों युद्धों में भरत पराजित हुआ । बाहुवलि ने अपने दोनो हाथों से उसे ऊपर उठाया और भूमि पर पटकने ही वाले थे कि अकस्मात रुक गये । उनका क्रोध अब शीतल हो गया । उनमें ज्ञानोदय हुआ । दुराशा और दर्प ने अपने भाई को किस सीमा तक पतन के गर्त में गिरा दिया है, इस सत्य को वे समझ गये । उनमें सांसारिक मोहों के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे राज्य का भी त्याग करके चल पड़े ।

भरत को अपने किये पर पछतावा हुआ ।अपने भाई से प्रार्थना की कि संसार का त्याग मत करो । परंतु बाहुबलि ने अपने भाई की एक ना सुनी । दृढ़ संकल्प के साथ निद्राहार का त्याग करके महीनों भर खड़े रहकर घोर तपस्या की ।उनके चारों ओर पौधे उग आये, लताएँ उनके हाथों और पैरों पर फैल गयीं । भरत पुनः अपने भाई के पास गया और कहा "श्रमण, कोई भी ना ही तुम्हारा है, ना ही मेरा है ।" लेकिन बाहुबलि टस से मस ना हुए, उनके निश्चय में कोई परिवर्तन नहीं हुआ ।इसके कुछ समय बाद उन्हें मोक्ष मिला । भरत ने अपने भाई की एक सुवर्ण प्रतिमा बनवायी और उसका प्रतिष्ठापन पोदनपुर में किया ।

दसवी शताब्दी में गंगा वंश के द्वितीय राचमल के संस्थान में चामुँडराय नाम के एक व्यक्ति थे, जो वहाँ के प्रधान मंत्री और सर्वसेनाधिपति भी थे । उनकी माँ कल्लल देवी को बाहुबलि की सुवर्ण प्रतिमा को देखने की इच्छा हुई । वे अपने पुत्र तथा आचार्य अजितसेन को साथ लेकर पोदनपुर निकलीं । मार्ग में पड़नेवाले चंद्रगिरि और इंद्रगिरि नामक दो पर्वतों के बीच में वे रुक गये । उस रात को तीनों ने एक ही प्रकार का सपना देखा । सपने में उन्हें कुष्मंदिनी देवी प्रत्यक्ष हुईं और बोलीं "आप लोग पोदनपुर में सुवर्ण प्रतिमा को देख नहीं पायेंगे । चंद्रगिरि पर खड़े हो जाइये और दक्षिणी दिशा में स्थित इंद्रगिरि पर सुवर्ण बाण छोड़िये ।" दूसरे दिन प्रातःकाल चामुँडराय ने ऐसा ही किया । जहाँ वह बाण गिरा, वहाँ बाहुबलि का रूप दिखायी पड़ा ।

चामुँडराय ने बाहुबलि की मूर्ति का निर्माण करवाया और वहाँ प्रतिष्ठापित करने के लिए शिल्पियों को बुलवाया । अरिष्ठनेमि नामक एक शिल्पी के नेतृत्व में बाहुबलि की अद्भुत मूर्ति का निर्माण हुआ । यह मूर्ति एक मात्र शिला से निर्मित हुई । ९८१ सं. मार्च २३ वीं तारीख को इंद्रगिरि पर इस मूर्ति की प्रतिष्ठापना हुई और स्वयं चामुँडराय ने प्रथम महामस्तकाभिषेक संपन्न किया । बचपन में चामुँडराय का नाम गोम (सुँदर) था । चूँकि उनके हाथों इस प्रतिमा की प्रतिष्ठापना हुई, अतः इस बाहुबलि की मूर्ति का नाम गोमटेश्वर पड़ा ।

यह मूर्ति उत्तर की ओर है । इसकी ऊँचाई ५७ फुट है । कोई ऐसा नहीं होगा जो इस मूर्ति में दर्शित, व्याप्त, मधुर, गंभीर दरहास पर मुग्ध ना हो । ऐसा लगता है कि वह संसार को शाँति और अहिंसा का उपदेश दे रहा हो । जैनमत अहिंसा में विश्वास रखता है और संसार को अपने विश्वास का बोध कराता है । मूर्ति के पाँवों के निकट एक छोटा-सा तालाब है । इसी को कन्नड़ में बेलगोला कहते हैं । समस्त अंगों को परिपूर्ण परिमाणों में बहुत ही जागरूकता से निर्मित अद्भुत कलाखंड है, यह मूर्ति ।

अभिषेक की पद्धति

पूजा के कार्यक्रम यद्यपि क़रीब पंद्रह दिनों के पहले ही प्रारंभ हुए किन्तु अभिषेक की पूर्ति में छे घंटे लगे । पहले मूर्ति का अभिषेक गन्ने के रस से, दूध से, जडीबूटियों के रस से किया जाता है । उसके बाद पाँवों के समीप के तालाब से तथा विविध नदियों के पवित्र जल से १००८ कलश भर दिये जाते हैं । ये कलश भक्त ले आते हैं और अभिषेक करते हैं । उसके उपरांत तीन प्रकार के चंदनों से व विविध पुष्पों से मस्तकाभिषेक संपन्न होता है । पुनः साधारण जल से अभिषेक होता है । समस्त त्यागनेवाले महान त्यागी बाहुबलि की पूजा आठ प्रकार के फल-पुष्पों से होती है ।

विचित्र वीणा

संगीतपुरी में नाम मात्र के लिए भी संगीत का कोई विद्वान नहीं था। परंतु हाँ, संगीत के वाद्यों को बेचने की केवल एक दुकान उस गाँव में थी, इसलिए उस गाँव का नाम संगीतपुरी पड़ा। वीणा, बाँसुरी, मृदंग आदि कोई भी वाद्य उस दुकान में अवश्य ही उपलब्ध होता था।

रामावतार उस दुकान का मालिक था। वह बूढ़ा हो गया, इसलिए उसका बेटा मुरली ही उस दुकान की देखभाल करता था।

संगीतपुरी से कोस की दूरी पर चिकने पहाड़ थे। उन पहाड़ों के नीचे एक घना जंगल भी था, जहाँ तरह-तरह के जंगली पेड़ थे। संगीतवाद्यों को बनाने के लिए आवश्यक सामग्री वहाँ मिलती थी। महीने में एक बार मुरली गाड़ी और कुलियों को लेकर वहाँ जाया करता था। आवश्यक सामग्री के लिए कुलियों से वह पेड़ कटवाता और उस लकड़ी से वाद्य बनाता। उस दुकान में जो वाद्य बनते थे, उनकी खूब मांग थी। आसपास के गाँववाले वहीं से खरीदते थे।

उस राज्य की राजकुमारी चारुलता ने सागबान से बनी एक श्रेष्ठ वीणा खरीदकर ले आने के लिए एक आदमी को उस दुकान में भेजा।

"अभी ऐसी वीणा दूकान में नहीं है। कुछ दिनों में बनाऊँगा और स्वयं राजकुमारी के पास ले आऊँगा। यह समाचार राजकुमारी को बताना" मुरली ने कहा और उस आदमी को भेज दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल, वीणा के लिए आवश्यक सागबान की लकड़ी ले आने मुरली केवल एक कुली को लेकर उन पहाड़ों में गया। उन्होने बहुत ढूँढ़ा, लेकिन श्रेष्ठ सागबान उन्हें कहीं नहीं मिला।

दुपहर को मुरली और कुली ने खाना खाया

और सागबान का वृक्ष ढूँढ़ने चल पड़े । बहुत देर तक ढूँढ़ने के बाद उनका परिश्रम सफल हुआ । एक छोटे-से झरने के पास उन्हें सागबान का एक दृढ़ वृक्ष दिखायी पड़ा । मुरली ने वृक्ष को अच्छी तरह परखा और उसे लगा कि यह वृक्ष उपयोगी है । परंतु उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि वृक्ष की टहनियाँ इतनी घनी क्यों हैं? कुली ने कुल्हाड़ी ली और उसे काटने का काम शुरू कर दिया ।

इतने में एक ध्वनि प्रतिध्वनित हुई "ठहरो, मेरा निवास-स्थल नष्ट मत कर ।" यह ध्वनि एक स्त्री की थी । दूसरे ही क्षण एक यक्षिणी उनके सम्मुख प्रत्यक्ष हुई ।

मुरली और कुली उस यक्षिणी को देखकर भय से कांप उठे, तब उस यक्षिणी ने कहा "यह मेरा निवास-स्थल है । बहुत ही वर्षों से, बड़े ही सुख से, मैं यहीं रहती आ रही हूँ । क्या मैं जान सकती हूँ कि तुम्हें इस वृक्ष को काटने की आवश्यकता क्यों पड़ी?"

मुरली ने देखा कि यक्षिणी क्रोधित नहीं है । बहुत ही शांत बोल रही है तो उसने अपने को संभाल लिया और साहस बटोरकर यक्षिणी से कहा "राजकुमारी को वीणा बनाकर भेजने का मैने वचन दिया है । इसके लिए आवश्यक वृक्ष, यहाँ कहीं भी नहीं है ।यही कारण है कि हमने इस वृक्ष को काटने का संकल्प किया है ।"

मुरली की इन बातों पर यक्षिणी क्रोधित हो बोली "केवल एक वीणा बनाने के लिए तुम्हें क्या मेरा ही पेड़ मिला है?" कहती हुई उसने अपने हाथ फैलाये ।

क्षण भर में उसके हाथों में एक अद्भूत वीणा आ गयी । उसमें कहीं-कहीं मूल्यवान हीरे भी जडे थे ।

मुरली आश्चर्य से उस वीणा को देखता जा रहा था । तब यक्षिणी ने कहा "यह वीणा बहुत ही महिमावान है । सा रे ग म से भी जो परिचित नहीं हैं, वे भी इस वीणा को बजा सकते हैं । वीणा के सम्मुख बैठकर सरस्वती देवी का श्रद्धा से ध्यान किया जाए तो जिस राग को बजाना चाहते हो, वह राग बजाया जा सकता है । वीणा की तंत्रियों पर हाथ फेरना पर्याप्त है ।

परंतु हाँ, दो राग ऐसे हैं, जिनके बारे

में अच्छी तरह सोच-विचारने के बाद ही बजाना चाहिये । मोहनराग बजाओगे तो वह स्त्री तुमसे प्रेम करेगी, जिसे उस क्षण तुम स्मरण करोगे । वरुण राग बजाओगे तो मूसलधार वर्षा होगी । एक बात भली-शांति ध्यान में रखो, जब तक यह वृक्ष जीवित होगा, तभी तक मैं यहाँ रहूँगी । और जब तक मैं इस पेड़ पर हूँ, तब तक ही इस वीणा में यह महिमा होगी । मेरी इन बातों को सदा स्मरण में रखना । अब यह वीणा ले । एक और बार तुम्हें स्मरण दिलाती हूँ । इन रागों को बजाने के पहले अच्छी तरह सोच-विचार लेना आवश्यक है । एक राग के बदले दूसरा राग बजाओगे तो कोई असाधारण घटना घट सकती है ।" उसने वह विचित्र वीणा मुरली को दी और अदृश्य हो गयी ।

मुरली कभी यह सोच भी नहीं सकता था कि महिमा से भरी ऐसी अद्भुत वीणा उसे मिल पायेगी । उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा । उसने सोचा, उस अद्भुत वीणा की सहायता से अगर मैं चाहूँ तो राजकुमारी चारुलता से ही विवाह कर पाऊँगा ।

मुरली ऐसे सपनों में जब गोते लगा रहा था तब उसे कुली ने उसे सावधान करते हुए कहा "यजमान, सूरज डूबनेवाला है । अच्छा यही होगा कि हम घर निकल पड़ें ।"

मुरली स्वप्नलोक से जाग उठा और कुली से कहा "ठीक है, अभी निकल पड़ेंगे । लेकिन ध्यान से सुनो, इस वीणा के बारे में किसी से कुछ भी मत बताना ।"

परंतु कुली जैसे ही घर पहुँचा, अपनी पत्नी

से वीणा के बारे में सब कुछ बता दिया । उसने अपनी पत्नी से स्पष्ट बताया कि इसके बारे में किसी और से बिलकुल मत कहना । भला कोई स्त्री रहस्य छिपा सकती है? रात भर उसे नींद नहीं आयी । अड़ोस-पड़ोस की औरतों को यह रहस्य बताने के लिए वह उतावली होने लगी । आखिर उसने यह रहस्य उगल दिया और सबेरा होते-होते यह रहस्य गाँव भर में आग की तरह फैल गया ।

मुरली सबेरे-सबेरे नींद से क्या उठा, उसने देखा कि बहुत-सी बड़ी भीड़ उसके घर के सामने जमा हो गयी । लग रहा था मानों वे किसी उत्सव में भाग लेने के लिए आये हों । मुरली तुरंत ताड़ गया कि क्या हुआ है और ऐसा क्यों हुआ है? वहाँ एकत्रित जनता मुरली से आग्रह करने लगी कि उस महिमावान वीणा की तंत्रियों को एक बार झंकृत कर दो ।

एक युवक, जिसे ऐसी महिमाओं पर बिलकुल विश्वास नहीं था, भीड़ में से आगे आकर बोला "विलंब क्यों? महिमाओं से भरी इस वीणा को झंकृत करो और हमारी राजकुमारी चारुलता से विवाह कर लो । भविष्य में तुम्ही इस देश के राजा भी बन जाओगो ।" उसकी बातों में व्यंग्य भरा हुआ था ।

उसकी दिल्लगी से मुरली नाराज़ हो उठा । उसकी बातों को सच प्रमाणित करने के लिए घर के अंदर जाकर वीणा ले आया, जिसे यक्षिणी ने उसे प्रदान किया था । घर के सामने के चबूतरे पर आसन लगाकर बैठ गया और थोड़ी देर तक आँखें बंद करके सरस्वती देवी का स्मरण किया, प्रार्थना की ।

जैसे ही प्रार्थना समाप्त हुई, उसने उस राग का मन ही मन मनन किया, जिससे राजकुमारी चारुलता उससे प्रेम करे । फिर तंत्रियों पर मृदलता से अपनी उँगलियाँ फेरीं । जनता ध्यान से एकाग्र होकर वीणा का नाद सुनने में मग्न हो गयी ।

अकस्मात वातावरण में परिवर्तन हुआ । आकाश में घने बादल घिर-घिर आये । बिजली कड़की । जनता के साथ-साथ मुरली भी घबरा गया । अब मुरली समझ गया कि मुझसे त्रुटि हो गयी है । मोहनराग के बदले उसने वरुण राग का मन ही मन

स्मरण किया था । इसीलिए वर्षा तीव्र होती गयी ।

"ग्रीष्म काल में अकस्मात यह वर्षा कैसी?" कहती हुई जनता अपने घरों की तरफ़ भागने लगी ।

आकाश में आँखों को चकाचौंध कर देनेवाली बिजली कड़की । फिर कहीं दूर बिजली के गिरने की आवाज़ सुनायी पड़ी । मुरली इसी सोच में पड़ गया कि मैंने यह कैसा अनर्थ कर दिया । अकस्मात उसे लगा कि उसके हाथों को कोई कोमल वस्तु छू रही है । उसने देखा कि वहाँ वीणा के स्थान पर एक बड़ा सर्प है ।

मुरली भयकंपित होकर चीख उठा । वह घबड़ाता हुआ उठ खड़ा हुआ । सर्प ने अपना फन फैलाया और मुरली को एक बार ध्यान से देखा । तक्षण ही वह सर्प चबूतरे के नीचे उतरा और बड़े वेग से आकाश में उड़ता हुआ अदृश्य हो गया ।

अपने घर के सामने एकत्रित जनता की चिल्लाहटें सुनकर मुरली का पिता रामावतार घर के बाहर आया और अपने पुत्र से पूरा वृत्तांत सुना । उसने मुरली से कहा "अरे मुरली, तुम्हारा व्यवहार हमारी वृत्ति-धर्म के बिलकुल विरुद्ध है । अब ही सही, इस अनुभव से लाभ उठाओ और सद्व्यवहार करना । व्यर्थ की दुराशा के गर्त में गिरकर अपने को कलंकित मत करो । ऐसा काम ना करो, जिससे लोग तुम्हारी हँसी उड़ाएँ । आज ही जाओ और अच्छे से अच्छा सागवान चुनकर राजकुमारी की वीणा बनाने में व्यस्त हो जाओ ।" यों अपने बेटे को उसने सलाह दी ।

मुरली जब सागवान के लिए उन पहाड़ों में गया तो उसने देखा कि जिस वृक्ष पर यक्षिणी का निवास था, वह वृक्ष बिजली के गिरने से जल गया ।

मुरली ने फिर से एक वृक्ष को ढूँढने में काफ़ी परिश्रम किया । एक महीने के अंदर राजकुमारी के लिए श्रेष्ठ वीणा बनायी और क़िले में जाकर उसे समर्पित किया ।
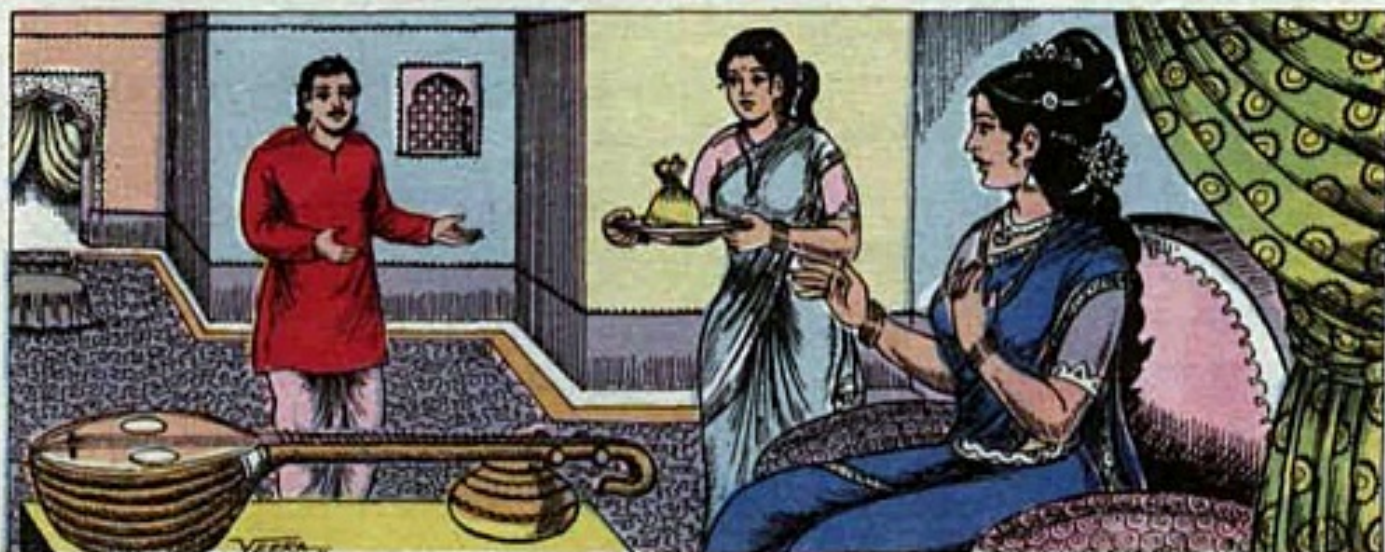
योद्धाओं का योद्धा

मगधराजा कृतकीर्ति ने हेलापुरी पर अक्रम आक्रमण किया और बुरी तरह से पराजित हुआ । अपनी विजय के कारक सेनाध्यक्षों तथा अन्य योद्धाओं को बुलाकर हेलापुरी के राजाने उनको अनेकों प्रकार से पुरस्कृत किया ।

एक समाचार सुनने में आया कि वीरबाहु नामक एक सैनिक ने रणक्षेत्र में अपना कमाल दिखाया । उसने हज़ार से अधिक शत्रु सैनिकों के हाथ-पाँव काट डाले । ग्रामवासियों को जब यह मालूम हुआ तो उन्होने वीरबाहु का सत्कार किया । वे उसके गले में अनगिनत फूल-मालाएँ डालकर जुलूस में ले गये । उसकी प्रशंसा में वे गाने लगे, नाचने लगे । वीरबाहु जनता के इस अपार आदर से जब आनंद में डोल रहा था तो भीड़ में से एक आदमी ने उससे पूछा "वीरबाहु, शत्रु-सैनिकों के सिर ना काटकर तुमने उसके हाथ-पाँव ही क्यों काटे?"

वीरबाहु अपनी मूँछ पर ताव देता हुआ थोड़ी देर सोचता रहा और फिर हठात् बोला "मुझेइसका मौक़ा नहीं मिला है, क्योंकि उनके सिर पहले ही कट चुके थे ।"

—रमण
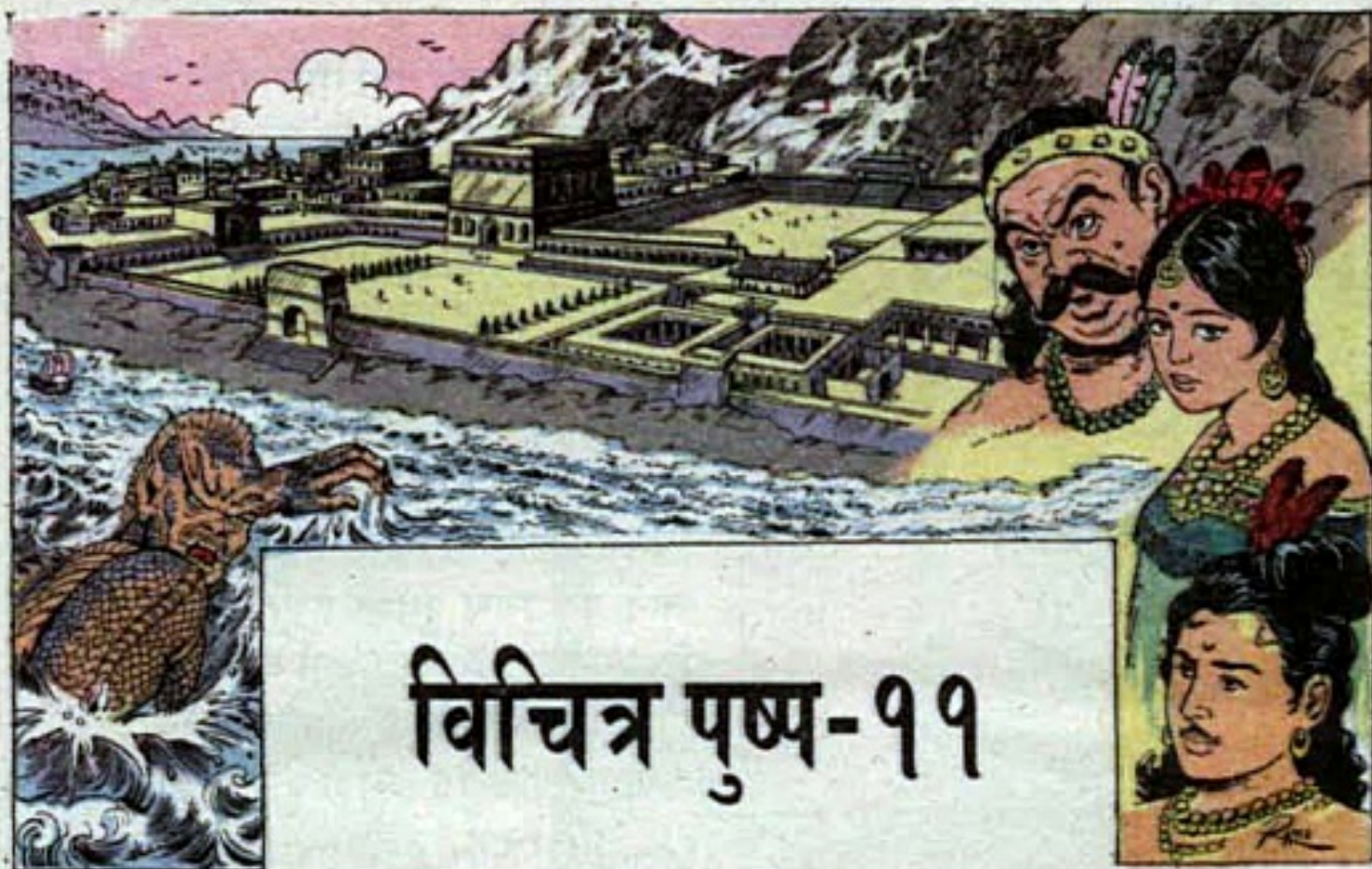
विचित्र पुष्प-११

(नागपुरि के राजा ने निर्णय किया कि दलपति नागसिंह के नेतृत्व में उत्तुंग के साथ कुछ सैनिकों को भेजूँगा, जो राक्षस जंतु को मारने में उसकी सहायता करेंगे। उसी रात को सरहदी प्रांतों से लौटे नागसिंह का परिचय, सेनाधिपति ने, उत्तुंग से कराया। पहाड़ी क़बीले का नायक काबूई भी आया और राजा को तथा सेनाधिपति को बताया कि अपने यहाँ रखे हुए 'शताब्दिका' पुष्प भी ग़ायब हो गये हैं। -बाद)

"उत्तुंग ने नागसिंह को बताया था कि कुछ 'शताब्दिका' पुष्प तुम्हारे घर में सुरक्षित हैं। क्या तुम्हारा विचार है कि उन पुष्पों की चोरी नागसिंह ने ही की है?" सेनाधिपति ने काबूई से पूछा।

काबूई क्षण भर के लिए सोच में पड़ गया और फ़िर बोला "नागसिंह के मस्तिष्क में अगर षडयंत्र रचने की योजना हो भी तो मेरी समझ में यह नहीं आता कि ये पुष्प किस प्रकार से उसके उपयोग में आ पायेंगे? आखिर इन पुष्पों का उसके षडयंत्र से क्या संबंध है?"

"तुम्हारा यह विचार मुझे भी सही लगता है। 'शताब्दिका' पुष्पों के बिना उत्तुंग अभियान पर निकल ही नहीं सकता, इसलिए अच्छा यही होगा कि तब तक तुम राजधानी में रहो" सेनाधिपति ने कहा।

"हाँ, ऐसा ही करूँगा" कहकर काबूई वहाँ

से सीधे उत्तुंग के अतिथि-गृह में गया। उन दोनों ने पुष्पों के बारे में बहुत समय तक चर्चा की और फिर सो गये।

दूसरे दिन मध्याह्न् को एक सैनिक आया और बोला "काबूई, आपको देखने के लिए दो युवतियाँ आयी हुई है।"

काबूई बाहर आया। उसने बाहर आकर देखा कि दो युवतियाँ खड़ी हैं। उनमें से एक युवती को संबोधित करते हुए उसने कहा "बेटी चित्रा, तुम और यहाँ? यहाँ क्यों आयी हो? माँ सकुशल तो है?"

"पिताश्री, माँ सकुशल हैं।" अपने पिता के बहुत ही निकट आती हुई धीरे से बोली "पिताश्री, जो पुष्प गायब हो गये थे, वे मिल गये हैं"।

"'शताब्दिका' पुष्प मिल गये?" सचमुच काबूई को बेटी की बात पर विश्वास नहीं हो रहा था।

"हाँ पिताश्री, सचमुच मिल गये हैं। हम हमेशा की तरह समुद्री तट पर गये। हमने वहाँ उत्तुंग की उल्टी पड़ी नाव को देखा। हमने झाँककर देखा तो देखा कि वहाँ पुष्प बिखरे पड़े हैं। रेत पर दो लकीरें भी देखीं, जिनसे लगता था कि नाव को समुद्र में खींच लाने का प्रबल प्रयत्न हुआ। हमने सोचा कि शायद उत्तुंग ने ही जाने का विफल प्रयत्न किया होगा।" चित्रा ने सविस्तार बताया। उसी समय उत्तुंग ने वहाँ प्रवेश किया।

"नहीं चित्रा, उत्तुंग तो रात को मेरे ही साथ था। अच्छा, यह तो बताओ कि वे पुष्प अब कहाँ हैं?" काबूई ने पूछा।

"वहीं, समुद्री तट पर रखी हुई नाव में ही हैं। यह शुभ समाचार सुनाने के लिए अपने सहेली के साथ मैं स्वयं यहाँ आयी हूँ" चित्रा ने कहा।

काबूई ने बड़े प्यार से अपनी बेटी के कंधों पर हाथ रखते हुए कहा "चित्रा, तुमने ठीक ही किया। तुम दोनों यहीं ठहरो। हम यह समाचार सेनाधिपति को सुनाकर आते हैं।" फिर उत्तुंग की तरफ़ देखते हुए कहा "चलो, चलते हैं।"

उत्तुंग ने साथ चलते हुए पूछा "क्या 'शताब्दिका' पुष्प मिल गये हैं? आपकी बेटी क्या कह रही थी?"

काबूई ने उत्तुंग को वे सारी बातें बतायीं,

जो उसकी बेटी ने उससे कही थी । उत्तुंग को यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि 'शताब्दिका' पुष्प मिल गये हैं । वह सोचने लगा, उन पुष्पों को लेकर नाव में जाने का प्रयत्न भला किसने किया होगा? अगर नागसिंह ने ही ऐसा प्रयत्न किया हो तो उसका क्या उद्देश्य होगा? इस प्रकार से सोचते हुए वह काबूई के साथ सेनाधिपति के महल के निकट पहुँचा । उनको देखते ही सेनाधिपति ने पूछा "क्या हुआ?" । काबूई ने पूरा समाचार उसे बता दिया ।

"शाबाश । वे सैनिक कहाँ हैं, जो यह शुभ समाचार ले आये?" सेनाधिपति ने पूछा ।
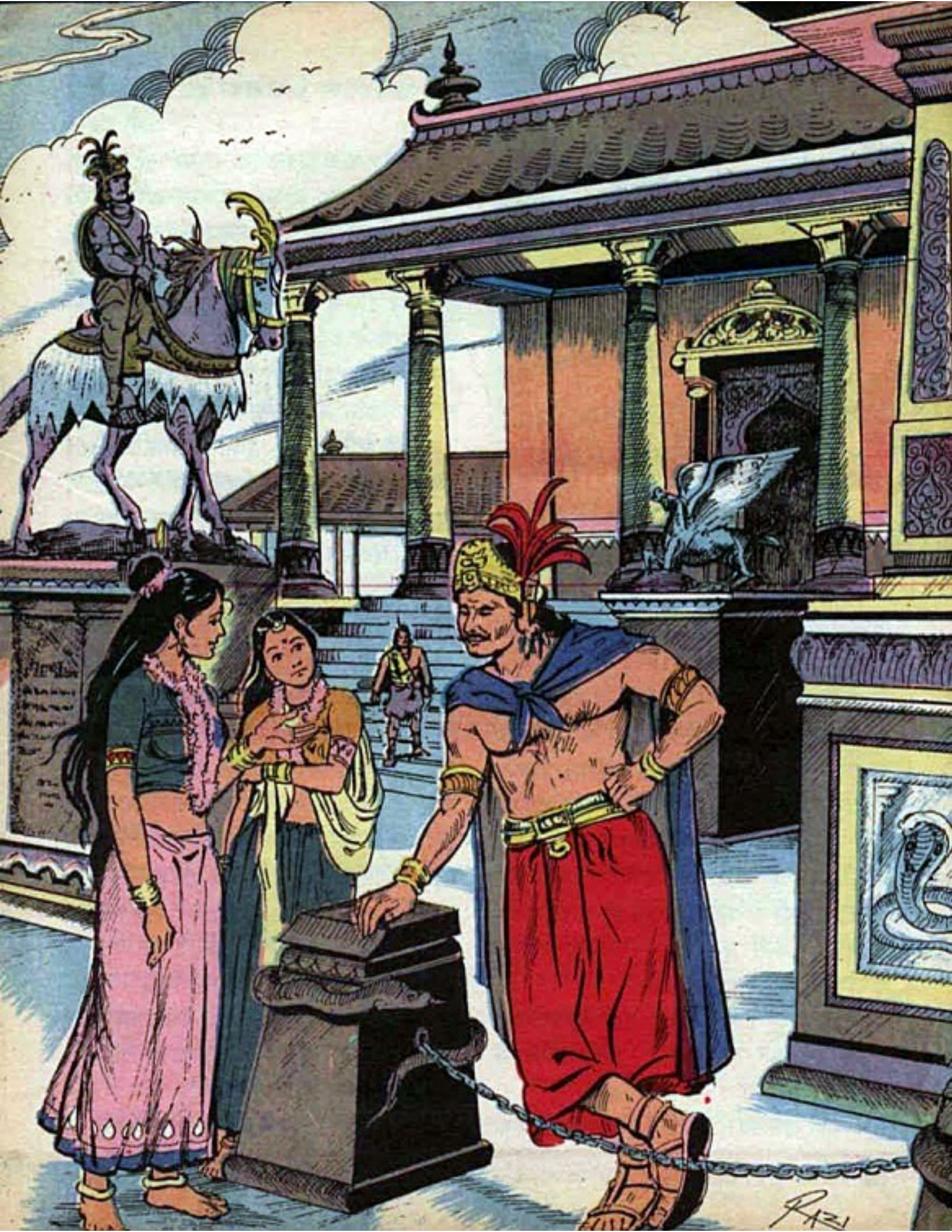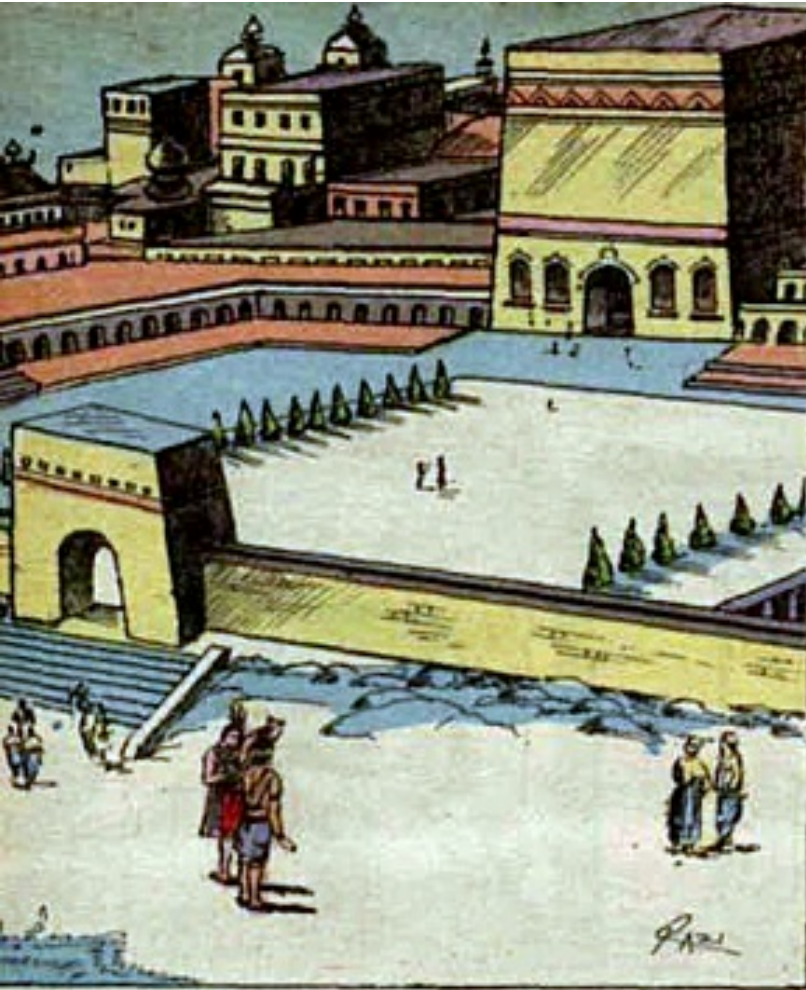
"यह समाचार सैनिकों ने नहीं, बल्कि मेरी बेटी चित्रा ने बताया है ।" काबूई ने कहा ।

"बहुत अच्छा किया ।पुष्पों की सुरक्षा का प्रबंध तक्षण ही करना है । अभी अपने कुछ सैनिकों को वहाँ भेजता हूँ । चलिये, पहले यह समाचार राजा को सुनाएँगे ।" वे तीनों वहाँ से राजभवन की ओर निकले ।

राजा ने उनसे पूरा विवरण प्राप्त किया, तो वह बहुत ही संतुष्ट हुआ । उसने कहा "अब मैं निश्चिंत हो गया हूँ, सेनाधिपति । उन पुष्पों को राक्षस जंतु तक भेजने में विलंब बिल्कुल नहीं करना चाहिये । काबूई, बोलो, तुम्हारा क्या विचार है?" उत्तुंग को संबोधित करते हुए पूछा "कब निकलने का इरादा है?"

"प्रभु, इसी क्षण निकलने के लिए भी मैं सन्नद्ध हूँ ।" उत्तुंग ने बड़ी उत्सुकता से कहा ।

राजा उठ खड़ा हुआ और उत्तुंग की भुजाओं पर हाथ रखते हुए बोला "शाबाश, तुम जैसे वीर, धीर किसी भी राज्य की मूल्यवान संपत्ति हैं । लौटते हुए हमारे राज्य से होते हुए अवश्य जाना ।" फिर उसने सेनाधिपति से कहा "आज ही उत्तुंग के लिए जो-जो चहिये, उनका प्रबंध करो । अभी जाकर 'शताब्दिका' पुष्पों के मिल जाने का समाचार मल्लिका को भी सुनाता हूँ ।" राजा भवन के अंदर चला गया ।

राजभवन से बाहर आकर सेनाधिपति ने

नागसिंह को ख़बर भेजी कि वह उससे तुरंत आकर मिले ।

दलपति नागसिंह थोड़ी देर में वहाँ पहुँचा ।सेनाधिपति, काबूई और उत्तुंग को एकसाथ देखकर वह चौंक पड़ा । अपने को संभालते हुए उसने सेनाधिपति को प्रणाम किया ।

"आज ही उत्तुंग यात्रा के लिए निकलनेवाला है । तुम और हमारे कुछ सैनिक उसकी रक्षा के लिए उसके साथ जाएँगे ।यह राजा की आज्ञा है ।" सेनाधिपति की बातों में कटुता भरी हुई थी ।

"हमें 'शताब्दिका' पुष्पों को भी अपने साथ ले जाना है ना?" नागसिंह ने पूछा ।

"हाँ, यह यात्रा भी उन पुष्पों को राक्षस जंतु तक ले जाने के लिए ही तो है । आज संध्या तक आप लोग समुद्री तट पर पहुँच जाइये । चट्टानों के बीच के रास्ते से समुद्र में जाइये और नाव में बैठकर आगे बढ़िये । आप के पीछे-पीछे दो नावों में हमारे सैनिक भी आयेंगे । बाक़ी कार्य उत्तुंग की निगरानी में होंगे ।" सेनाधिपति ने कहा ।

"तो पुष्प?" नागसिंह कुछ और पूछना चाहता था, पर पूछते-पूछते रुक गया ।

"मैं तुमसे बता चुका हूँ कि सब तैयारियाँ हो चुकी हैं । बस, तुम्हारे निकलने की ही देरी है ।" सेनाधिपति ने कहा ।

"जैसी आपकी आज्ञा, सेनाधिपतिजी" कहते हुए वह वहाँ से तेज़ी से चला गया ।

उसके चले जाने के बाद सेनाधिपति ने उत्तुंग से कहा "पुष्पों की चोरी हो जाने की बात नागसिंह को मालूम हुई होगी । अब उन सब बातों पर टीका-टिप्पणी करने का समय नहीं है । वह अकेले उस राक्षस जंतु का सामना नहीं कर सकता, इसलिए तुम्हें हानि पहुँचाने की गुंजाइश है । तुम्हें सावधानी बरतनी होगी; उससे चौकन्ना रहना होगा ।"

विनयपूर्वक उत्तुंग ने कहा "आपकी चेतावनी हमेशा याद रखूँगा ।"

सेनाधिपति ने काबूई से कहा "तुम उत्तुंग के साथ समुद्री तट तक जाओ और उसे

विदा करो ।"

'जैसी आज्ञा' कहकर काबूई, उत्तुंग को लेकर अतिथि-गृह की ओर चल पड़ा । काबूई ने सब बातें अपनी बेटी चित्रा को बतायीं, जो उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी ।

उनके पहुँचने के थोड़ी देर बाद नागसिंह वहाँ आया । सब मिलकर समुद्री तट पर पहुँचे । रास्ते में नागसिंह ने एक शब्द भी अपने मुँह से नहीं निकाला । उसके मुख पर तीव्र चिंता तथा निरुत्साह स्पष्ट दीख रहे थे ।

उनके वहाँ पहुँचते ही सैनिकों ने दलपति को प्रणाम किया और उनका आह्वान किया । तीन नावें तैयार रखी गयी थीं । एक नाव में 'शताब्दिका' पुष्प रखे गये थे । उन्हें देखने पर ऐसा लगता था, मानों वे अभी-अभी विकसित हुए हों । उनसे सुगंध व्याप्त हो रही थी । उत्तुंग ने पहचान लिया कि जिस नाव में पुष्प हैं, उसी में वह यहाँ पहुँचा था । अपनी कमर में बंधी थैली में छिपाकर रखे गये पौधों को उसने चित्रा को छिपे-छिपे सौंपा और संकेतों से समझाया कि इन्हें अपने घर में सावधानी से सुरक्षित रखना ।

चित्रा ने पौधों को लिया और बहुत ही व्याकुल होती हुई उत्तुंग की तरफ़ देखने लगी ।

'शताब्दिका' पुष्पों को देखते ही नागसिंह में उत्साह भर आया ।उसका चिंतित मुख आनंद से खिल उठा । वह उत्तुंग की तरफ़ इस आशय से देखने लगा कि निकलने में वह क्यों विलंब कर रहा है । काबूई ने उसके मनोभाव को जान लिया और कहा "उत्तुंग, अंधेरा छा जाने के पहले ही निकलना श्रेयस्कर होगा । मेरी बात अवश्य याद रखना । लौटते हुए हमारे यहाँ ज़रूर आना" यों कहकर उसने उसे विदा किया ।

उत्तुंग ने उसे प्रणाम किया और नाव की ओर बढ़ा । नागसिंह पहले से ही नाव में बैठा हुआ था ।सैनिकों ने नाव को पानी में ढकेला । उस नाव के पीछे-पीछे शेष दोनों नावें भी निकल पड़ीं ।

"तुम्हें कैसे मालूम है कि इन पुष्पों को

राक्षस जंतु के निवास स्थल के निकट ले जाने मात्र से वह माणिक्यपुरी नहीं आयेगा?" उसकी कर्कशता से भरी बातों को सुनकर उत्तुंग ने अपना सर उठाया और उसे ग़ौर से देखा ।

नागसिंह क्रोध से उसे देख रहा था ।

"इन पुष्पों से आकर्षित होकर ही राक्षस जंतु माणिक्यपुरी आया था । अब हमने ऐसा प्रबंध किया है, जिससे एक भी 'शताब्दिका' पुष्प वहाँ है ही नहीं । सब पुष्पों को बांधकर मैं अपने साथ ले आया हूँ । और सौ साल तक उन फूलों के विकसित होने का प्रश्न ही नहीं उठता । बड़ों का विश्वास है कि तब तक राक्षस जंतु माणिक्यपुरी में प्रवेश नहीं करेगा ।" उत्तुंग ने सहनशक्ति से उसे समझाने का प्रयत्न किया ।

"इसका मतलब यह हुआ कि इन पुष्पों को दिखाकर राक्षस जंतु से समझौता करना चाहते हो । मैने ठीक कहा है ना" नागसिंह ने पूछा ।

"राक्षस जंतु से समझौता? तुम क्या कह रहे हो? उसके पास जाकर बातें करना कैसे संभव होगा? क्या हमारी भाषा उसकी समझ में आयेगी? मेरा संदेह तो दूर करो कि आखिर उस राक्षस जंतु से तुम्हारा क्या काम?" चकित होकर उत्तुंग ने उससे सीधे सवाल किया ।

"बुहत ही मुख्य काम है मेरा उससे । राजभवन, रानी तथा मुख्यतया राजकुमारी

का सर्वनाश करना है मुझे । इस कार्य को संपन्न करने के लिए मुझे राक्षस जंतु की सहायता चाहिये ।" नागसिंह ने अपना लक्ष्य स्पष्ट-स्पष्ट बता दिया ।

उत्तुंग को लगा कि एक और भयानक जंतु से बात कर रहा हूँ ।राक्षस जंतु ने पुष्पों के लिए हाहाकर मचा दिया तो यह नर राक्षस अपने स्वार्थ के लिए उससेभी भयंकर वातावरण की सृष्टि के लिए तत्पर है ।

"वे अच्छे लोग हैं और तुम्हारे बंधु भी हैं । तुम उनका नाश करने पर क्यों तुले हुए हो?" उत्तुंग ने पूछा ।

"मुझे नागपुरि का राजा बनना है । इस लक्ष्य की पूर्ति में जो भी रुकावट ड़ालेंगे,

बाधक बनेंगे, उनका मैं सर्वनाश कर दूँगा ।इस कार्य की पूर्ति तक ना कोई मेरे सगे हैं, ना ही कोई मेरे बंधु हैं, ना ही कोई निकट के हैं । मेरे हृदय में उनके लिए कोई स्थान नहीं । उनके प्रति मुझमें ना ही दया का भाव होगा या ना ही प्रेम का । तुम भी मेरे रास्ते में रुकावट बनकर आओगे तो तुम्हें भी मारने के लिए मै हिचकिचाऊँगा नहीं ।" नागसिंह ने अपनी मुट्ठी बंद करते हुए अपना उद्देश्य बताया । उसके मुख पर क्रूरता स्पष्ट दिखायी दे रही थी ।

"तुम मेरा भी नाश कर दोगे? माणिक्यपुरी से लाये हुए पुष्प तेरे उपयोग में लाये जाएँ, कदापि मैं इसकी अनुमति नहीं दूँगा । उनके द्वारा राजपरिवार को नष्ट पहुँचे, ऐसा कभी नहीं होने दूँगा ।" उत्तुंग के स्वर में दृढ़ता थी, अटल निश्चय था ।

"तुम जीवित रहो, तब ना तुम्हारे अस्वीकार करने की बात उठती है ।" कहता हुआ उठा और उत्तुंग को समुद्र में ढ़केल दिया । उत्तुंग समुद्र में औंधे गिर गया । फिर उसका पता भी नहीं चला । अपनी नाव को उस नाव की ओर घुमाया, जिसमें सैनिक बैठे आ रहे थे । अपनी नाव में जो 'शताब्दिका' थे,उन्हें दूसरी नाव में रखवा दिया । वह भी वहीं जा बैठा ।

सुमुद्र में गिरा उत्तुंग धीरे-धीरे तैरने लगा । अपना सर पानी से निकालकर देखा । अंधेरा छाया हुआ था । अकस्मात् कोई वस्तु उसके हाथ से छू गयी ।उसने उसकी खूब छानबीन की तो उसे मालूम हुआ कि वह एक खाली नाव है । बड़ी कोशिश के बाद वह नाव में बैठ पाया ।सौभाग्यवश उसमें दो डाँड भी थे । उसने देखा कि एक तरफ़ बहुत ही दूरी पर ऊँचे-ऊँचे चट्टान हैं । 'शताब्दिका' पुष्पों के विना राक्षस जंतु का सामना करना व्यर्थ प्रयास है, इसलिए वह उन चट्टानों की तरफ़ बढ़ा ।

(सशेष)
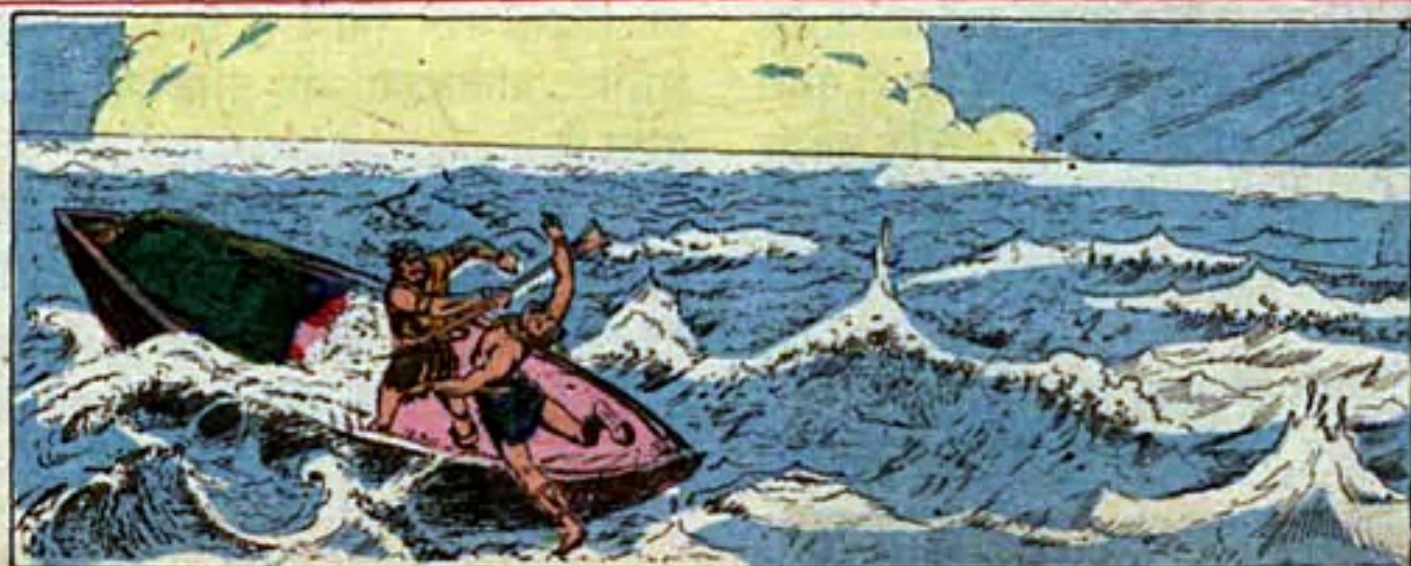
रंगनाथ के आशय

धुन का पक्का विक्रमार्क पेड़ के पास फिर गया और पेड़ से शव को उतारा । उसे उसने अपनी भुजाओं पर ड़ाल लिया और यथावत् श्मशान की तरफ़ अग्रसर होने लगा । तब शव के अंदर के वेताल ने राजा से कहा "राजन्, घनघोर अंधकार है, कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है । फिर भी तुम अपने कर्तव्य को निभाने में किसी प्रकार की ढ़िलाई नहीं दिखा रहे हो । तुम्हारे इस परिश्रम को देखकर तुमपर मुझे बड़ी दया आ रही है । मेरी तो समझ में नहीं आ रहा है कि जिस लक्ष्य की प्राप्ति में तुम इतने मग्न हो, उसकी प्राप्ति से तुम्हें लाभ होगा या परायों को । क्योंकि कुछ निस्वार्थी व्यक्ति इन-गिने विशिष्ट व्यक्तियों के लिए ही नहीं, बल्कि बिना सोचे-विचारे निरर्थक व्यक्तियों के लिए भी त्याग करने के लिए सन्नद्ध हो जाते हैं । इसके लिए उन व्यक्तियों को मैं अधिक दोषी भी नहीं ठहराता । उसका

बैताल कथा

कारण है, परिस्थितियों के प्रभाव में आकर वे निरर्थक व्यक्ति भी कभी-कभी नीति के रास्ते पर चलते हैं । इसका ज्वलंत उदाहरण रंगनाथ है ।मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाऊँगा । अपनी थकावट भी दूर करते जाओ और उसका वृत्तांत भी सुनते जाओ ।" फिर वह यों कहने लगा ।

रंगनाथ रायपुर गाँव का बड़ा धनी आदमी था । हर दिन कितने ही लोग उसके पास आते थे । उसकी सुनायी हुई दिलचस्प कहानियाँ बड़े चाव से सुनते थे । चबूतरे पर बैठकर वह यों लोगों को अपनी कथाओं से बहुत ही आकर्षित करता था ।

सच कहा जाए तो, रंगनाथ उन व्यक्तियों में से नहीं था, जो किसी के काम आये । वह उपस्थित लोगों से बताता रहता था "दूसरों को हानि पहुँचाना जितना ग़लत है, उतना ही ग़लत है दूसरों की भलाई करना । आदमी को तो चाहिये कि वह अपना काम करता जाए, अपने जीवन की ही देख-देख करता रहे और दूसरों के बारे में अनावश्यक ना सोचे । इस प्रकार के जीवन में ही शांति है, भलाई है । इससे अपना भला तो होगा ही, साथ ही संसार का भी भला होगा ।"

रंगनाथ की ऐसी बातों को सुनते-सुनते ग्रामवासियों में परोपकार की बुद्धि भ्रष्ट हो गयी ।

इस समय उस गाँव में एक साधु आया हुआ था । उसने लोगों से कहा "दूसरों के लिए जीने में जीवन की सार्थकता है । ऐसा मनुष्य इहलोक में ही नहीं, परलोक में जाने के बाद भी सुखी रह सकेगा ।"

शनैःशनैः उस साधु का प्रभाव ग्रामवासियों पर पड़ने लगा । अब ग्रामवासियों ने पुण्य-कार्य करने की ठानी ।

उस गाँव में वीरदास नामक एक युवक था । बचपन में घर के गिर जाने से उसके माँ-बाप मर गये । उस समय उसे भी चोट लगी, जिससे वह लंगड़ा हो गया । वह कोई भी काम करने के लायक़ नहीं रहा । इसलिए भीख माँगकर अपनी जीविका चलाने लगा । धर्मदास वीरदास का निकट का रिश्तेदार था । उसने धर्मदास को अपने घर में शरण देने का निश्चय किया । उसने अपना निर्णय रंगनाथ को सुनाया ।

"घर में रखकर वीरदास का पालन-पोषण करोगे तो वह एकदम सुस्त बन जायेगा। अभी तो वह भीख माँगकर अपना पेट भर रहा है। अगर तुम चाहते हो कि वह किसी पर बोझ बनकर ना रहे तो उसे मेरे घर भेज देना। उसे मैं बाँस से बनी टोकरियों तथा टट्टियों को बनाने का काम सिखाऊँगा। हमारे गाँव के सब आदमी उसी से यह सब सामग्री खरीदेंगे। यह हुई ना मदद।" रंगनाथ ने कहा।

धर्मदास को रंगनाथ की बात सही लगी। उसने वीरदास को उसके यहाँ भेजा। रंगनाथ की पत्नी को अपने पति का यह काम अच्छा नहीं लगा। उसे लग रहा था कि वीरदास जैसे अपाहिज को घर में बिठाकर खाना खिलाना होगा। वह अपने पति पर झुंझला पड़ी तो उसने अपनी पत्नी को यों समझाया "पगली कहीं की, तुम्हें मालूम नहीं कि बाँस से बनी इन वस्तुओं का यह व्यापार कितना लाभदायक है। वीरदास के यहाँ रहने से हमें कोई नुक़सान नहीं है, लाभ ही लाभ है। ज़्यादा से ज़्यादा हमें क्या करना होगा। बस, खाना खिलाएँगे, थोड़ी रक़म उसे देंगे और बाकी रक़म हम रख लेंगे।"

बाद यह साबित भी हो गया कि रंगनाथ का उपाय सही उपाय है। उसकी पत्नी इससे प्रसन्न भी हो गयी। अब रंगनाथ की उदारता पर लोग उसकी प्रशंसा करने लगे।

एक दिन ग्रामवासी नंदबाहु रंगनाथ के पास आया और बोला "हमारे गाँव में पाठशाला नहीं है। बच्चे शहर में जाकर विद्याभ्यास कर रहे हैं। उतनी दूर जाने में

बाँटूँगा । एक और ने कहा कि सब विद्यार्थियों को दुपहर के समय मुफ़्त खाना खिलाऊँगा । रंगनाथ ने इन सब प्रस्तावों का तिरस्कार किया और कहा "पाठशाला के चारों ओर काफ़ी ख़ाली जगह है । बच्चों को जब समय मिलेगा, तब उनसे काम करायेंगे । तरकारियों का बाग़ लगवाएँगे । इससे पाठशाला को आमदनी होगी । उस रकम से ग़रीब बच्चों में किताबें मुफ़्त में बाँटेंगे, उन्हें मुफ्त खाना खिलाएँगे । ग़रीब बालकों से काम कराके उन्हें थोड़ा-सा धन भी देंगे । उन्हें भी महसूस होगा कि स्वयं परिश्रम करके हमने कमाया है । इससे मेहनत की कमाई पर उनका आदर बढ़ेगा । दान लेने से उनमें घृणा उत्पन्न होगी ।"
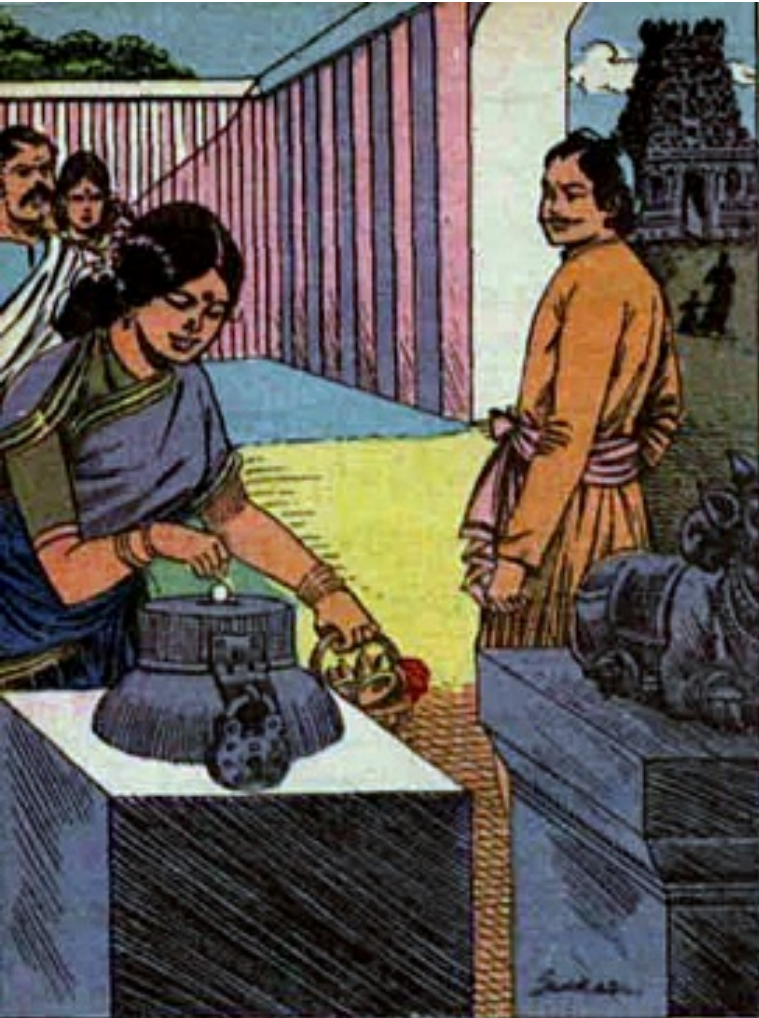
बच्चों को कष्ट झेलना पड़ रहा है । इसलिए मैं उनके लिए निश्शुल्क बैलगाड़ी का प्रबंध करूँगा । परंतु रंगनाथ ने उसके इस प्रस्ताव की स्वीकृति नहीं दी । उसने कहा कि अपने गाँव में ही पाठशाला खोलेंगे । गाँव की जो बंजर भूमि थी, उसमें उसने एक बड़ी झोंपड़ी बनवायी । इसके लिए जो खर्च हुआ, उसका एक भाग गाँववालों से भी वसूल किया । अपने दूर के रिश्तेदारों को उस पाठशाला में अध्यापक के रूप में नियुक्त किया । ग्रामीणों का सहयोग भी उसे प्राप्त होता रहा, इसलिए पाठशाला की भी आमदनी बढ़ी । इससे उसे भी कमाई होने लगी ।

ग्रामवासी सीतापति ने कहा कि पाठशाला में पढ़नेवाले बच्चों में निश्शुल्क पुस्तकें

इस प्रकार गाँव की सारी जनता रंगनाथ की मुट्ठी में जकड़ गयी । पाठशाला, मंदिर सब उसी के अधीन हो गये । आमदनी भी दुगुनी हो गयी ।

एक दिन हंसपुर नामक गाँव से अंबर नामक एक व्यक्ति रायपुर आया । वह गाँव के प्रमुखों से मिला और बोला "मेरे पास अपार संपत्ति है । आगे-पीछे मेरा कोई नहीं है । जो भी मेरे पास है, ग़रीबों में बाँटना चाहता हूँ । उनकी मदद करके उनके जीवन को सुखी बनाना चाहता हूँ । इसलिए सब गाँवों में जा रहा हूँ । आप लोगों के गाँव में जितने भी ग़रीब हैं, उन सब को बुलाइये । उन्हें खेत खरीदकर दूँगा । जिनके पास खेत हैं, उनके लिए किसी उपयोगी वृत्ति का प्रबंध

करूँगा ।"

ग्रामवासी उसके इस प्रस्ताव पर बहुत संतुष्ट हुए । उन्होने रंगनाथ को बुला भेजा और पूरा विषय बताया । उनकी इन बातों को सुनकर रंगनाथ आग बबूला हो गया और बोला "हमारे गाँव में दान स्वीकार करने लायक कोई ग़रीब नहीं है । सब मेहनत कर रहे हैं और कमा रहे हैं । अपनी ऐसी कमाई पर उन्हें गर्व भी है ।"

उस गाँव में रंगनाथ के किये गये प्रबंधों की जानकारी प्राप्त करने के बाद अंबर बोला "तुम असाधारण व्यक्ति हो । मेरी भी संपत्ति लो और उसका सदुपयोग करो ।"

रंगनाथ उसकी बातों पर क्रोधित होते हुए बोला "अगर सन्यास लेकर हिमालय पर्वतों पर जाना चाहो तो जाओ । अपनी संपत्ति इस देश के राजा को दो । मुझे तुम्हारी संपत्ति नहीं चाहिये । मैं ग़रीबों की सहायता करूँगा, जिससे वे अपने पैरों पर खुद खड़े हो सकें और प्रगति कर सकें । दान लेना मेरे सिद्धांतों के विरुद्ध है । आज तक तुमने कोई पुण्य कार्य नहीं किया होगा । तुमने यह संपत्ति पाप और अन्याय के मार्ग पर चलकर कमायी होगी । दान स्वीकार करना घोर पाप है । इसलिए मेरी सलाह है कि तुम यह संपत्ति राजा को समर्पित कर दो । प्रजा की संपत्ति प्रजा के अधिपति के पास जायेगी तो तुम्हारे पाप भी धुल जाएँगे ।"

बेताल ने रंगनाथ को यह कहानी सुनाकर राजा विक्रमार्क से पूछा "राजन्, रंगनाथ कुटिल स्वभाव का है, स्वार्थी है । फिर भी जब अंबर ने अपनी संपत्ति देनी चाही तो

उसने अस्वीकार कर दिया ।क्या इससे ऐसा नहीं लगता कि उसके विचारों में आमूल परिवर्तन आ गया है, अनीति के रास्ते पर ना चलकर नीति के रास्ते पर चलने की उसकी इच्छा प्रबल हो गयी है । बताओ तो सही, इसका क्या कारण हो सकता है? जानते हुए भी मेरे इन संदेहों को दूर नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़ों में फट जायेगा ।"

विक्रमार्क ने कहा "तुच्छ, स्वार्थी रंगनाथ ने अंबर के प्रस्ताव को ठुकराया तो इसका यह अर्थ नहीं हुआ कि उसमें परिवर्तन आ गया ।ऐसा समझना बड़ी भूल होगी । रंगनाथ के व्यवहार को सूक्ष्म रूप से जाँचना होगा । तभी उसकी असलियत मालूम हो पायेगी । तभी मालूम होगा कि उसकेजीवन का आशय क्या है? वह अच्छे काम कर नहीं सकता । अगर अन्य अच्छे काम कर रहे हों तो उन्हें अपना सहयोग दे नहीं सकता । स्वलाभ ना हो तो कोई भी काम करने वह तैयार नहीं होता । वह यह भी नहीं चाहता कि उसकी बदनामी हो । अच्छे काम करनेवालों को अच्छे काम करने से वह रोकता है । वह यह साबित करने के लिए अपनी सूझ-बूझ का उपयोग कर रहा है और कहता है कि दूसरों से किये जानेवाले कामों में बुराई है । अंबर के विषय में उसका स्वभाव परिवर्तित नहीं हुआ । उसने कहा कि अंबर की संपत्ति अनुचित और अक्रम है । उसने यह भी कहा कि यह संपत्ति राजा को समर्पित करो और अपने पाप धो लो । ऐसा कहने में उसका उद्देश्य था कि सबको मालूम हो जाए कि अंबर के किये जानेवाले कामों में बुराई है । ऐसा करने से उसे विश्वास है कि लोग उसे निस्वार्थी, परोपकारी, दाता मानेंगे और उसका अधिकाधिक गौरव होगा ।

इन तथ्यों को दृष्टि में रखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उसके स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ । बुरे से अच्छे बनने का कोई भी संकल्प उसमें नहीं है । अगर कोई ऐसा समझे तो यह उसकी भूल होगी ।"

बेताल राजा के मौन-भंग में सफल हुआ । वह शव को लेकर अदृश्य हो गया । पेड़ पर जा बैठा ।

आधार: जे. रामलक्ष्मी की रचना

कहते कुछ, करते कुछ

गंगाराम व्यापारी था। वह किसानों से अनाज खरीदता और उसे शहर ले जाकर बड़े व्यापारियों में बेचता था। उसका एक ही बेटा था। उसका नाम था सुँदर। गंगाराम भली भाँति समझ गया कि उसका बेटा पढ़ाई में बहुत ही कमज़ोर है। उसने बहुत कोशिश की कि सुँदर पढ़े-लिखे, लेकिन उसके सारे प्रयत्न व्यर्थ हो गये। इसलिए उसने निर्णय कर लिया कि अपनेसाथ बेटे को भी शहर ले जाऊँगा और व्यापार की पद्धतियाँ समझाऊँगा।

एक दिन सबरे गंगाराम ने सुँदर को बुलाया और कहा "सुनने में आया है कि पोतनूर गाँव का पुराणिक अपना अनाज बेचने जा रहा है। तुम पहले वहाँ जाओ और जानो कि अनाज अच्छा है कि नहीं। यह जानने के बाद हम दोनों वहाँ जायेंगे और मूल्य निर्धारित करके खरीद लेंगे। ऐसा करने पर तुम भी व्यापार की सूक्ष्मताओं तथा पद्धतियों से परिचित हो जाओगे।"

सुँदर सबेरे-सबेरे पोतनूर गया और शाम होते-होते वापस लौटा।

गंगाराम ने बेटे से पूछा "वापस लौटने में इतनी देरी क्यों हुई?" सुँदर पिता के इस प्रश्न पर झुँझलाता हुआ बोला "आप ही ने तो कहा था कि अनाज को खूब परखो; पता लगावो कि अनाज अच्छा है या खोटा। पुराणिक सौ बोरों का अनाज बेचना चाहता हैं। हर बोरे के अनाज को परखने में इतना समय लग गया। यही विलंब का कारण है। मुझे अनाज ठीक ही लग रहा है।"

बेटे का जवाब सुनकर गंगाराम हँस पड़ा और बोला "बेटे, खाना पका है या नहीं, यह जानने के लिए यह कोई ज़रुरी नहीं कि पूरा खाना हाथ में लें और ग़ौर से देखें। एक दाना लो तो यह काफ़ी है। उसी तरह

नरेंद्र

अनाज के गुण को जानने के लिए सौ के सौ बोरे देखें, यह कोई जरूरी नहीं । यहाँ से थोड़ा, वहाँ से थोड़ा अनाज नमूने के तौर पर अपनी हथेली में लो और देखो तो अनाज की असलियत का पता चल जायेगा । बात समझ में आयी?"

'समझ में आ गयी' कहते हुए सुँदर ने अपना सर हिलाया । दूसरे दिन सबेरे गंगाराम किसी आवश्यक काम पर पड़ोस के गाँव में गया और शाम को लौटा ।

तब सुँदर ने अपने पिता से कहा "नागराज शहर से आया था । हमें जो बीस हज़ार रुपये देने थे, दिये और रसीद लेकर चला गया । रकम तिजोरी में सुरक्षित रखी है ।"

"बहुत अच्छा । यह रक़म देरी से ही सही, मिल गयी । इस रकम को वसूल करने मैं कल स्वयं शहर जाना चाहता था । अच्छा हुआ, अब जाने की ज़रूरत नहीं पडी । नागराज बहुत ही चालाक आदमी है । उसने जो रक़म दी, उसे ठीक-ठीक गिना है ना? कुछ फरक तो नहीं है ना?" पिता ने पूछा ।

सुँदर निधड़क बोला "फरक़ तो हो ही नहीं सकता । नागराज ने एक-एक थैली में हज़ार रुपये रखे और उसने कुल मिलाकर बीस थैलियाँ दीं । मैने हर थैली को खोलकर नहीं देखा । नमूने के तौर पर दो तीन थैलियों की परीक्षा ली और ठीक पाया । कल आप ही ने तो कहा था कि नमूना देखना काफ़ी है । मैने ऐसा ही किया, जैसा आपने कहा । मैने नागराज को रसीद भी दी और रकम तिजोरी में रख दी ।"

बेटे की इन बातों को सुनते ही गंगाराम घबड़ा गया । उसने सब थैलियाँ तिजोरी में से निकालीं । सब थैलियों में से रकम निकाली और पूरा गिन लिया । दो हज़ार रुपयों की कमी थी । गंगाराम क्रोध से अपने बेटे को देखता रहा ।

सुँदर समझ गया कि पिताजी उससे बहुत नाराज़ हैं । उनसे बचने के लिए वहाँ से निकलते हुए अपने आप बड़बड़ाने लगा "ये बड़े लोग विचित्र मानव हैं । कहते कुछ हैं और करते कुछ । जो कहा, मैने किया, फिर भी मुझी को दोषी ठहरा रहे हैं । छी ।"

चन्दामामा परिशिष्ट - ६४

हमारे देश के पशु-पक्षी

सफ़ेद बाघ

रेवा के सफ़ेद बाघों के बारे में कोई जब बात छेड़ता है, तो उनसे संबंधित कहानी की भी याद अनायास ही आ जाती है । लगभग चालीस सालों के पहले याने १९५१, की, २६ तारीख को यह घटना सचमुच घटी । रेवा के महाराज ने आगत अतिथियों के लिए 'रेवा' जंगलों में शिकार का प्रबंध किया । चार बच्चों के साथ एक बाघिनी शिकारियों के सामने से गुज़र रही थी । बाघिनी तथा उसके तीन बच्चे गोलियों के शिकार हो गये । बाघ का एक सफ़ेद बच्चा बचकर भाग निकला । परंतु दूसरे दिन तक उसे ढूँढ़ निकाला और वह गोविंदगढ़ ले जाया गया । वह बच्चा नौ महीने का था । उसका नाम रखा गया 'मोहन' । उसके बाद 'बेगम' नामक बाघिनी और उसके दस बच्चे हुए । पर उनमें से एक भी सफ़ेद रंग का नहीं था । फिर 'मोहन' और 'राधा' नामक साधारण बाघिनी का मिलाप कराया गया । उनके चार बच्चे हुए । चारों सफ़ेद रंग के थे । १९५८, अक्टोबर, ३० को उनका जन्म हुआ । इस प्रकार 'मोहन' नामक सफ़ेद रंग का बाघ हमार देश में और अन्य देशों मेंपाये जानेवाले सफ़ेद रंग के बाघों का मूल माना जाता है ।१९९० जनवरी तक हमारे देश की दस जंतुप्रदर्शिनी शालाओं में १६ बाघ और २३ बाघनियाँ हैं । विदेशी जंतुप्रदर्शनी शालाओं में २७ बाघ तथा ३८ बाघनियाँ हैं । १० बच्चे भी हैं । यह चार सालों के पहले की बात है ।

मामूली बाघों के शरीर का रंग पक्के नारंगी रंग का तथा सोने के पीले रंग का होता है । शरीर भर काली लकीरें होती हैं । जबड़े, गले तथा पेट का निचला भाग सफ़ेद होता है । सफ़ेद रंग के बाघों का शरीर सफ़ेद होता है ।उसके शरीर पर खाकी रंग की लकीरें होती हैं । आँखों में नीला रंग होता है । सफ़ेद बाघ साधारण बाघों से बड़ा होता है ।परंतु इनकी आदतों और स्वभाव में किसी भी प्रकार का भेद नहीं है ।

अबुल फज़ल, अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक थे । १५६१ में इन्होंने 'अकबरनामा' की रचना की । विशिष्ट बात तो यह है कि उन्होने उस ग्रंथ में सफ़ेद बाघ का उल्लेख किया । बिरले ही दीखनेवाले इस जानवर का नाम 'अकबरनामा' में पाया गया है ।

रामकिंकर

'शांतिनिकेतन रवींद्रनाथ टागौर से स्थापित संस्था है । इसके कलाभवन का निर्वाह सुप्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बसु कर रहे थे । १९२५ में रामकिंकर नामक एक बालक उनके पास लाया गया ।

नंदलाल बोस ने उससे पूछा "तुमसे चित्रित कोई चित्र तुम्हारे पास हैं?"

'हाँ, हैं' कहते हुए उस बालक रामकिंकरने चालीस पृष्ठों का एक नोट पुस्तक बहुत ही सकुचाते हुए उनके सम्मुख रखा । उस पुस्तक भर में उनसे चित्रित चित्र थे ।

नंदलाल बसु ने उन्हें देखकर मुस्कुराते हुए अपना सिर हिलाया और रामकिंकर को कलाभवन में विद्यार्थी के रूप में प्रविष्ट किया ।

'मोडरन रिव्यू' के संपादक रामानंद चटर्जी ने इसके पूर्व ही रामकिंकर की प्रतिभा को पहचान लिया था । उन्होने ही रामकिंकर को शांतिनिकेतन भेजा । श्रेयोभिलाषियों ने उनमें जो विश्वास रखा, थोड़े ही समय में रामकिंकर ने प्रमाणित किया कि वे उसके योग्य हैं । अपनी

अद्वितीय कल्पना-शक्ति से उन्होने अपने अध्यापकों तथा सहपाठियों का प्रेम प्राप्त किया ।

श्री रामकिंकर ने कलाभवन में पूर्वी तथा पाश्चात्य चित्रकला की शैलियों, व संप्रदायों का बखूबी अध्ययन किया । फिर इनसे प्रेरणा पाकर उन्होने अपनी अलग शैली बनायी, जो विलक्षण व अद्वितीय थी । मुख्यतया भारतीय चित्रशैली में नैरूप्य शैली का प्रवेश करनेवाले ये ही थे । यों वे इस शैली के मार्गदर्शक हुए ।

चित्र जो है, जैसे है, उनका चित्रण यथावत् ना करके उस चित्र के भाव को और स्पष्ट, गहरे तथा प्रतीकात्मक रूप से चित्रण करने की ही शैली है 'नैरूप्यशैली' । उदाहरणस्वरूप एक बुद्धिमान को ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जा सकता है, जिसका सिर उसके शरीर से भी बृहत् है ।

श्री रामकिंकर के चित्र बहुत ही शक्तिमान हैं । लगता है, उनके चित्र स्थिर चित्र नहीं बल्कि उनमें गति है । प्रकृति के रमणीय दृश्यों, जंतुओं, पक्षियों, मनुष्यों तथा अद्भुत प्राणियों का चित्रण उन्होने किया था । (दिल्ली रिज़र्व बांक के सामने रामकिंकर से निर्मित युगल पक्षियों के शिल्प हैं ।)

रामकिंकर बिल्कुल ही सीधे-सादे व्यक्ति थे । वे आडंबर से कोसों दूर रहते थे । समालोचकों ने उनकी भरपूर प्रशंसा की, परंतु उनमें गर्व नाम मात्र के लिए भी नहीं था ।

१९७६ में विश्वभारती ने उनका विशिष्ट सम्मान किया, उच्च उपाधि देकर उन्हें पुरस्कृत किया । विविध क्षेत्रों के प्रमुखों ने उनकी खूब प्रशंसा की । १९८० में वे अपने सत्तरवें वर्ष में मर गये ।

क्या तुम जानते हो?

१. जब निर्णय लिया गया कि भारत को स्वतंत्रता दी जानी चाहिये तब भारत में वायसराय कौन थे?
२. संसार में शक्कर का उत्पादन किस देश में अधिक होता है?
३. कालिदास के समकालीन राजा कौन थे?
४. किस देश के धन को 'लीरा' कहकर पुकारते हैं?
५. 'बुद्धचरित्र' ग्रंथ के ग्रंथकर्ता कौन हैं?
६. 'सेफ्टीपिन' के आविष्कारक कौन हैं?
७. हमारे देश के किस प्रांत में अधिकाधिक जंगल हैं?
८. 'गुलाबी घाटी' किस देश में है?
९. हमारे देश के एक तालाब के बीच में राष्ट्रीय बाग़ है। उसका क्या नाम है?
१०. संसार भर में सबसे बड़ा रेगिस्तान कौन-सा है?
११. हमारे देश में 'रेशन' की पद्धति का कब प्रवेश हुआ?
१२. 'जयशंकर प्रसाद' से रचित सुप्रसिद्ध काव्य का नाम क्या है?
१३. संसार में सबसे ठंडा शीतकाल कहाँ होता है?
१४. मोहनदास गांधी दक्षिण अफ़्रीका से हमारा देश किस साल लौटे?
१५. 'इंडोनेशिया' में प्रजातंत्र के स्थापक कौन हैं?
१६. लवंग और काली मिर्च का किस प्रांत में अधिक उत्पादन होता है?
१७. विंबिलडन चाम्पियनशिप्स' कब शुरु हुए?
१८. हमारे देश का चेस चाम्पियन कौन हैं?
१९. 'वंदे मातरम' गीत की रचना किसने की?

उत्तर

१. लार्ड वेवेल
२. क्यूबा
३. चंद्रगुप्त विक्रमादित्य
४. इटली
५. अश्वघोष
६. वाल्टर हैंट
७. अरुणाचल प्रदेश
८. बल्गेरिया
९. मणिपूर में स्थित 'मधुपूर नेशनल पार्क'
१०. उत्तर अफ्रीका का रेगिस्तान
११. १९४३ में बंगाल अकाल के समय
१२. 'कामायनी'
१३. सैबेरिया (मैनस ५० सेंटिग्रेड)
१४. १९१५ में
१५. सुकर्णो
१६. केरल
१७. १८८७ में
१८. विश्वनाथन आनंद
१९. बंकिमचंद्र चटर्जी

नक़ाबपोश

कठियावाड़ की काली की नयी-नयी शादी हुई । पत्नी भानुमति को ससुराल सेवह गाड़ी में ले आ रहा था, तो रास्ते में एक तालाब को देखकर गाड़ी रोक दी और उतरा । समीप ही खपरैल का एक पुराना घर था । घर के चारों ओर तरकारियों का बग़ीचा था । बौने दंपति तरकारियों को काट रहे थे और एक टोकरी में ड़ालते जा रहे थे ।

उन्हें देखकर काली हँसने लगा तो पत्नी भानुमति ने पूछा "उन बौनों को देखकर हँस क्यों रहे हो?"

"चार महीनों के पहले की एक बात याद आ गयी, इसलिए हँसी आ गयी । सुनो" काली ने कहा ।

उसने कहना शुरू कर दिया । चार महीनों के पहले जब वह इसी रास्ते से गुज़र रहा था तो बाढ़ आयी । गाड़ीवाले ने सफ़र के लिए जो रकम निर्धारित की थी, उसमें से आधी रक़म ली और चला गया ।

अंधेरा छा रहा था । धीमी-धीमी बारिश भी होने लगी । काली इसी घर के पास आया और दरवाज़ा खटखटाया । एक बौनी स्त्री ने दरवाज़ा खोला और पूछा "आप कौन हैं? आपको क्या चाहिये?"

"बाढ़ की वजह से मैं यहाँ फँस गया हूँ । थोड़ी देर के लिए क्या इस घर में मुझे आश्रय मिलेगा?" "यह भी पूछने की कोई बात है" कहता हुआ एक आदमी बाहर आया । वह भी बौना था ।

पति-पत्नी के आग्रह करने पर काली ने उनके साथ भोजन किया । बातों-बातों में बौनी स्त्री ने कहा "मेरे भाई राजू को शाम तक लौटना था, लेकिन अब तक नहीं लौटा । मालूम नहीं, ऐसा क्यों हुआ है" । कहती हुई उसने कुछ रोटियाँ और भाजी एक बरतन

सुरेंद्रपाल

में रख दिये ।

उन्होंने सामने के कमरे में काली के सोने का प्रबंध किया । वे अंदर के कमरे में सो गये! जब काली निद्रा की गोद में जा ही रहा था तो दरवाज़े के खटखटाने की आवाज़ आयी ।

काली उठ बैठा और पूछा "कौन है?" "मैं राजू हूँ" दरवाज़े के बाहर से ही आवाज़ आयी । काली ने दरवाज़ा खोला और सामने के आदमी को देखकर ड़र से कांप उठा । नक़ाब पहना हुआ वह आदमी हाथ में चमकता हुआ एक छुरा लिये खड़ा था ।

"क्या मेरा भाई राजू आ गया" कहती हुई वह बौनी स्त्री बाहर आयी । उस नक़ाबपोश आदमी को देखकर एकदम चिल्ला पड़ी ।

उस नक़ाबपोश ने छुरा उस बौनी स्त्री के गले पर रखा । काली उसपर टूट ही पड़नेवाला था कि उस आदमी ने उसे सावधान करते हुए कहा "एक क़दम भी आगे बढ़ाया तो इसका गला काट दूँगा ।" उसके सुर में कर्कशता भरी हुई थी ।

बौनी स्त्री को मारने की धमकी देते हुए, नक़ाबपोश ने बौने पति से घर में रखे हुए गहने और धन को एक गठरी में बँधवाया । काली की अंगूठी और पैसे भी ले लिये । फिर वह बाहर आया और बाहर से दरवाज़ा बंद करके भाग गया ।

उन बौनों की हालत देखकर काली को उनपर बड़ी दया आयी । अगर जल्दबाज़ी में दरवाज़ा ना खोलता तो उनपर यह विपदा ना आती । वह आप ही आप बहुत पछताने लगा, अपने को कोसने लेगा ।

काली उन दोनों से क्षमा मांगने लगा तो बौने आदमी ने काली को रोका और कहा "तुम्हें तो हाथ जोड़कर नमस्कार करना चाहिये । जब वह चोर छुरा दिखाकर मेरी पत्नी को धमकी दे रहा था, तब अच्छा हुआ, तुम उसपर टूट नहीं पड़े । परिस्थिति की तीक्षणता को दृष्टि में रखक़र तुम अगर ऐसा करते तो वह मेरी पत्नी की हत्या कर देता । तुम्हारे ही कारण मेरी पत्नी बच गयी है । तुम्हें हम हृदयपूर्वक धन्यवाद देते हैं ।"

दूसरे दिन सबेरे काली घर लौटा । परंतु उसका मन दुखी था । क्योंकि उसे लगा कि

उसी की जल्दबाज़ी की वजह से उन बौनों को नष्ट पहुँचा है । अपनी माँ से उसने सब कुछ बताया । वह भी दुखी होती हुई बोली "यह तो सच है कि तुम्हारी ही वजह से उन बौने दंपतियों को नष्ट पहुँचा है । उन लोगों ने अपने घर में आश्रय दिया है, तुम्हें खाना खिलाया है । तुम्हें तो उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिये । परंतु अनजाने में तुमसे भूल हो गयी है, उन्हें हानि पहुँचायी है । तुम्हारे कारण उन्हें जो नुक़सान हुआ है, उसे भरना हमारा कर्तव्य है । एक हज़ार रुपये ले जाओ और उन्हें दे आओ ।"

माँ के कहे अनुसार हज़ार रुपये लेकर काली चल पड़ा । अब बाढ़ बिल्कुल कम हो गयी थी, इसलिए नाव में बैठकर आसानी से उस पार पहुँच गया । परंतु उन बौनों के घर के समीप जाते-जाते उसने जो देखा, उससे वह चकित रह गया । घर के बाहर उस दिन का नकाबपोश कुछ ढूँढ़ रहा था । पेड़ के पीछे खड़े होकर काली ग़ौर से देखने लगा ।

इतने में पिछवाड़े से बौनी स्त्री वहाँ आयी । काली ड़र गया कि वह नकाबपोश शायद फिर से उस स्त्री को आपत्ति में ड़ाल देगा । वह तक्षण ही उसपर टूट ही पड़नेवाला था कि उसने देखा, वह स्त्री चोर के पासआयी और उसके कान में कुछ बताकर वहाँ से चली गयी ।

अब काली समझ गया कि वह नकाबपोश उन्हीं का आदमी है । इस नाटक का अर्थ यह हुआ कि ये तीनों मिले-जुले हैं, और यात्रियों को इस प्रकार लूट रहे हैं ।

काली ने एक क्षण भर का भी विलंब नहीं किया । दरवाज़ा खटखटाते हुए उस नकाबपोश के पास गया और उसके सिर पर अपनी मुट्ठी से ज़ोर की मार मारी । वह बिना शब्द निकाले धड़ाम से नीचे गिर गया । काली नेउसकी नकाब पहन ली और दरवाज़ा खटखटाता हुआ बोला "दरवाज़ा खोलिये, मैं हूँ राजू ।"

कीमती कपड़े पहने हुए साठ सालके एक दुबले-पतले आदमी ने दरवाज़ा खोला और कहा "राजू । तुम्हारी दीदी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है । अंदर आओ ।" जैसे ही उस दुबले-पतले आदमी ने नक़ाबपोश काली को देखा तो ड़र से थरथरा गया और

वहीं अचेत गिर पड़ा । वह उस रात को उस घर में आश्रय लेने आया हुआ सज्जन था ।

बौनी स्त्री को इन सब बातों का पता नहीं था । वह यथावत् कहती हुई बाहर आयी कि क्या मेरा भाई राजू आ गया । काली को देखकर चिल्ला पड़ी ।

काली ने छुरा उसके गले से लगाया और कहा "लगता है, ऐन वक़्त पर तुम्हारा पति घर में मौजूद नहीं है ।" उसने उस स्त्री के गले में पड़े गहनों और धन को एक गठरी में बंधवाया । फिर उसे कमरे में भेज दिया और बाहर से दरवाज़ा बंद कर दिया ।

फिर उसने उन बौने पति-पत्नी को एक पत्र लिखा । "तुम लोगों की बुद्धि भी, तुम्हारे रूप के अनुरूप है । चोरी गंदा व तुच्छ पेशा है । शरीर पर बनाया गया गोदना भी मिटाया जा सकता है, लेकिन एक बार चोरी की छाप पड़ जाए तो वह मिटायी नहीं जा सकती । यह दाग़ शाश्वत है । यात्रियों को धोखा देकर लूटनेवाले तुम लोगों को पुलिस के हवाले कर सकता हूँ लेकिन तुम लोगों के रूप देखते हुए तुमपर दया आती है, क्रोध नहीं आता । तुम लोगों को एक और अवकाश दे रहा हूँ । तुम्हारे घर के चारों ओर काफी खाली जगह पड़ी हुई है । तरह-तरह की तरकारियों के बीज बो सकते हो, पौधे लगा सकते हो । मेहनत करने पर उसका फल भी पा सकते हो । अच्छी तरह सोचो और सही निर्णय पर आओ । तुम्हारे घर से लूटा हुआ धन व गहने मैं किसी अनाथ आश्रम के सुपुर्द कर दूँगा ।"

काली ने अपनी पत्नी को पूरा वृत्तांत सुनाया और फिर कहा "अब उन बौनों के घर के चारों ओर फूलों के पौधे हैं । उन्हें देखते हुए ऐसा लगता है कि उन्होने चोरी करना समाप्त कर दिया है और आत्मसम्मान से जी रहे हैं । इसीलिए संतुष्ट होकर मैं हँस रहा था ।"

"आप केवल बुद्धिमान ही नहीं बल्कि साहसी भी हैं । फिर कभी इस ओर से गुज़रना हुआ तो अवश्य ही उन दंपतियों को बधाई देंगे ।" भानुमति ने आनंद से कहा ।

चंदामामा की ख़बरें

कम्प्यूटर से नहलाइये

नहाने के लिए भी क्या आप सुस्ती महसूस कर रहे हैं? तो बहुत ही जल्द पत्रिकाओं में प्रकाशित होनेवाले 'बास-रोबो' विज्ञापन की प्रतीक्षा कीजिये। हाँ, कम्प्यूटर की सहायता से स्नान करानेवाले रोबोट का आविष्कार हुआ है जापान में। आपको केवल एक काम करना है। १.६ मीटर की लंबाई की हौदे में बैठ जाइये। जैसे ही आप के शरीर पर गरम पानी गिरेगा, अपनी आँखें बंद कर लीजिये। उसके बाद साबुन का पानी आप पर छिड़का जायेगा। फिर गरम पानी की बौछार होगी। आखिर ठंडी हवा आपके शरीर पर चलेगी और पूरा पानी सुखा देगी। शायद आपको संदेह होता होगा कि आप की पीठ को कौन रगड़ेगा। आप अपना संदेह दूर कीजिये, क्योंकि कम्प्यूटर न नहलाने के समस्त कार्यक्रम सुचारू रूप से करेगा। पर हाँ, आप शापू का स्नान करना चाहेंगे तो पहले से ही आपको सिर पर लगाकर स्नान कर लेना होगा और हौदे में बैठना होगा। नहीं तो साबुन का पानी आपकी आँखों में गिरने की संभावना है। जापान की पाँच कंपनियों ने मिलकर इस 'बात रोबोट' का रूप सँवारा है। इसकी कीमत सुनकर या देखकर मुँह खोले मत रह जाइयेगा। इसकी कीमत है, करीबन चौदह लाख रुपये।
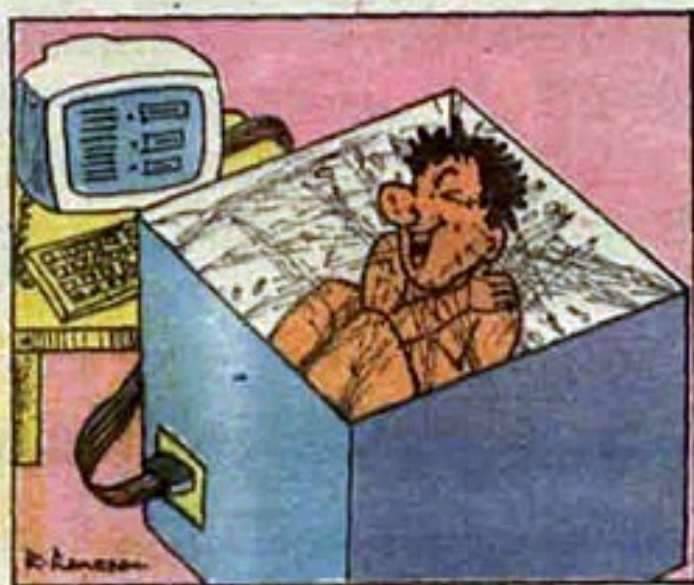
इंग्लीष चानल में।

१९ शताब्दी में इंग्लीष चानेल में देश की रक्षा के लिए एक किले का निर्माण किया गया था। वहाँ अब शान और आराम से रहने के लिए निवासगृह बनाये जानेवाले हैं। फेंच सेनाएँ इंग्लैड पर अपना आक्रमण ना कर सकें, इसके लिए अंग्रेज़ों ने इंग्लीष चानेल में सैनिकों के लिए एक किले का निर्माण किया। पचास तोपों के साथ चार सौ सैनिक वहाँ हमेशा रहा करते थे। उस किले को, घर के कमरों में परिवर्तित करने के लिए ६.२५ मिलियन अमेरीकी डालरों में बेचा गया। इसमें लैटहौस तथा हेलिकाप्टर उतरने का भी इंतज़ाम है।

साधारण और असाधारण

देश भर में भ्रमण करता हुआ एक साधु लक्ष्मीपुर नामक एक गाँव में पहुँचा। तालाब के किनारे पर बरगद का जो पेड़ था, उसके नीचे रहने लगा। वह हर दिन ग्रामवासियों को वेदांत पर प्रवचन दिया करता था। ग्रामीण बारी-बारी से अपने यहाँ उसे भोजन खिलाया करते थे।

साधु एक दिन लक्ष्मणदास नामक एक ग्रामीण के घर में भोजन कर रहा था। उस समय दास के यहाँ गुरू नामक एक आदमी आया और बोला "महाशय, वचन के अनुसार आपका कर्ज़ कल तक चुकाना है, लेकिन समय पर रक़म ना मिलने की वजह सेअपना वचन नहीं निभा पाऊँगा, आपका कर्ज़ चुका नहीं पाऊँगा। एक और महीने का समय चाहिये।"

लक्ष्मणदास ने क्रोधित होकर उससे कहा "तुम अपने वचन के पक्के नहीं हो। तुम्हारे जैसे व्यक्ति को कर्ज़ देकर मैने बड़ी भूल की है।" बेक़ाबू होकर उसने गुरू को खूब गालियाँ दीं और भेज दिया।

साधु ने यह सब देखा और सुना तो उसने लक्ष्मणदास से कहा "पुत्र, क्रोध अनर्थदायक है। उसे वश में रखना चाहिये। बताओ तो सही, गुरू को गालियाँ देकर आखिर तुमने पाया ही क्या है? बस, अपने दिल की भड़ास निकाल ली।"

लक्ष्मणदास ने विनय से साधु को प्रणाम करते हुए कहा "स्वामी, मेरे गालियाँ देने से किसी के दिल को बाधा नहीं पहुँचेगी, क्योंकि मेरा क्रोध क्षणिक है। किसी को भी यों गाली देता हूँ और यों भूल जाता हूँ। उनके प्रति मेरे हृदय में प्रतिशोध की कोई भावना नहीं होती।"

साधु ने दास की प्रशंसा की और कहा "क्रोध को वश में रखना सद्गुण है। अगर

श्रीनिवास

क्रोध क्षणिक ही हो तो, अच्छा है । उससे भी तो अच्छा यह है कि तुम्हारा क्रोध क्षणिक ही है, शाश्वत नहीं । उसमें बदले की भावना का ना होना बड़ी विशेषता है ।" साधु और कुछ कहने ही जा रहा था कि इतने में लक्ष्मणदास का दोस्त प्रताप वहाँ आया ।

भोजन करते हुए साधु को उसने देखा तो कहा "स्वयं परिश्रम किये विना, दूसरों के परिश्रम पर आधारित होनेवाले सुस्त लोगों से मुझे बड़ी चिढ़ है । मेरी दृष्टि में वे निकम्मे हैं । इन जैसे लोगों को खाना खिलाकर तुम कोई उचित कार्य नहीं कर रहे हो ।"

लक्ष्मणदास अपने दोस्त की बातों से बहुत दुखी हुआ और साधु से क्षमा माँगने लगा तो साधु ने उससे कहा "अपना-अपना अभिप्राय है । इसके लिए तुम उन्हें दोषी मत ठहराओ ।" मुस्कुराता हुआ वहाँ से चला गया ।

इसके चंद दिनों के बाद लक्ष्मणदास साधु का दर्शन करने उस बरगद के पेड़ के पास आया । वहाँ उसने उसी गाँव के वासी भास्कर को देखा ।

भास्कर को देखते ही लक्ष्मणदास ने उसका कंधा पकड़ लिया और पूछा "अबे, कब तक बचकर जाओगे । अब हाथ में आ गये हो । आज इसका फ़ैसला हो जाना चाहिये कि तुम ज़िन्दा रहोगे या मैं?"

साधु ने बीच में दखल देते हुए कहा "शांत पुत्र, शांत । बताओ तो सही, बात क्या है?"

लक्ष्मणदास ने भास्कर के कंधे से अपना हाथ हटा लिया और कहा "स्वामी, एक महीने के पहले जब मैं मंदिर में पूजा कर
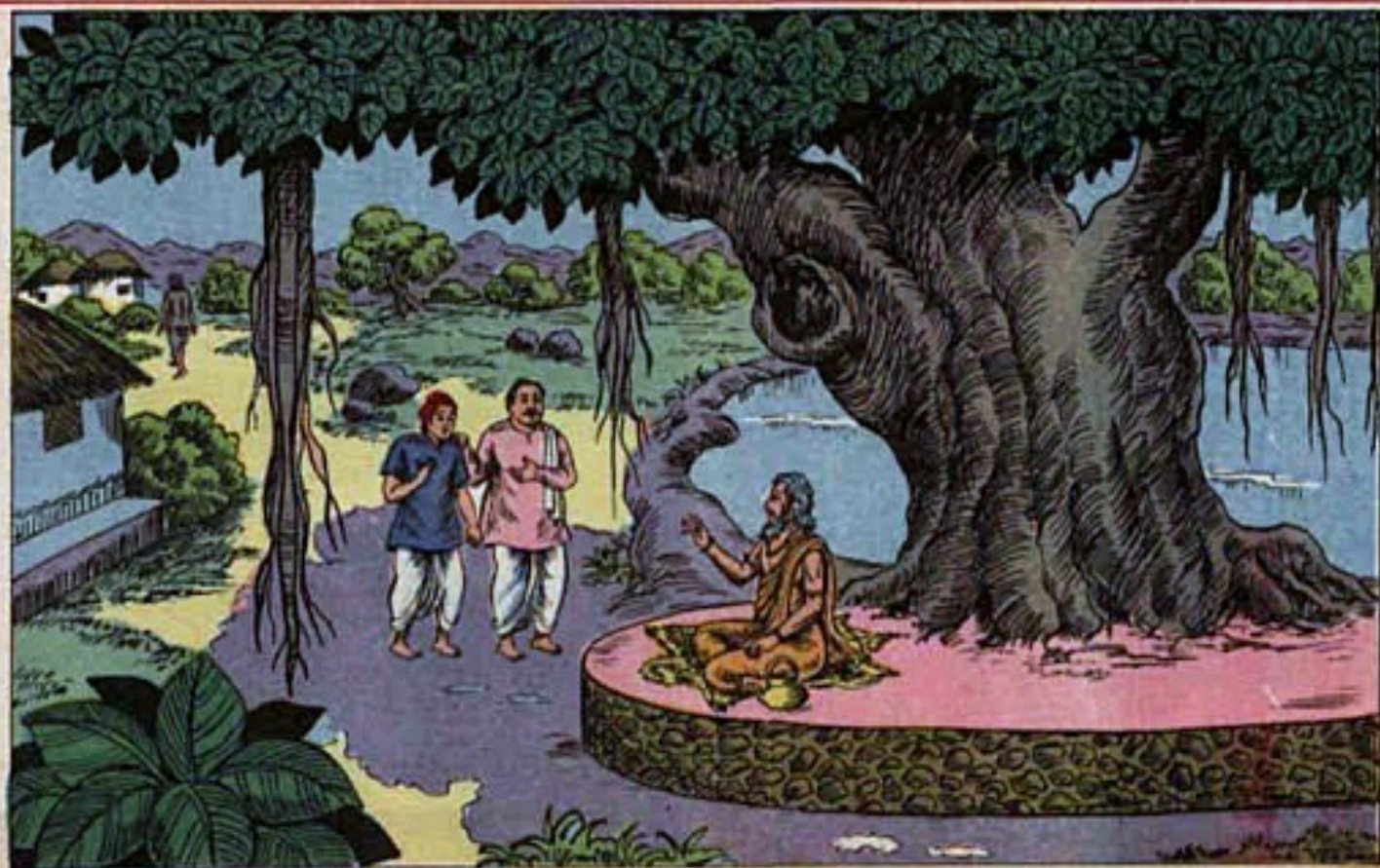
रहा था तब पुजारी ने मेरी भक्ति की भरपूर प्रशंसा की । तब यह भास्कर मेरा मज़ाक उड़ाता हुआ बोला कि बुरे काम करनेवालों में दैवभक्ति कुछ अधिक ही होती है । इसने सबके सामने मेरा घोर अपमान किया । "

साधु ने लक्ष्मणदास को समझाते हुए कहा " दूसरों के दिलों को दुख पहुँचानीवाली बातें नहीं कहनी चाहिये ।"

इतने में प्रताप वहाँ आया और कहा "स्वामी, साधुओं की श्रेष्ठता और महत्व को जाने बिना मैंने कुछ दिनों पहले आपका अपमान किया था । मुझे क्षमा कीजिये !"

साधु मुस्कुराते हुए बोला "मुझे ज्ञात नहीं कि तुमसे क्या अपराध हुआ है? किसके लिए मैं तुम्हें क्षमा करूँ? अगर तुम्हें कोई कष्ट हो तो बताना । जहाँ तक मुझसे हो सके, मैं तुम्हारी सहायता करूँगा ।"

बात यों हुई । प्रताप की पत्नी अस्वस्थ हुई । कुछ लोगों ने बताया कि यह कोई साधारण रोग नहीं है । कुछ दुष्ट ग्रहों के कारण उसकी ऐसी स्थिति हो गयी है । साधु ही उसकी रक्षा कर सकते हैं । अब प्रताप के सामने कोई दूसरा चारा नहीं था, इसलिए अब वह साधु के पास चला आया ।

साधु प्रताप के घर गया और मंत्रोच्चारण किया । दूसरे ही दिन उसकी पत्नी स्वस्थ हो गयी । लक्ष्मणदास ने साधु का यह चमत्कार देखा और साधु से बोला "अकारण प्रताप ने आपको गालियाँ दी, फिर भी आपने उसे माफ़ कर दिया और उसकी भलाई की । आप सचमुच महानुभाव हैं, असाधारण व्यक्ति हैं ।"

साधु हँसा और बोला "मैं भी तुम्हारे ही जैसा हूँ । तुम दूसरों को गाली देते हो और भूल जाते हो । दूसरे अगर मुझे गाली दें तो मैं भूल जाता हूँ, उनकी मुझे याद ही नहीं रहती । अकारण किसी को गाली देने से मुझे दुख होता है और वह दुख मैं जीवन भर झेलता रहता हूँ । इसीलिए सदा इसी प्रयत्न में रहता हूँ कि मैं किसी को गाली ना दूँ, किसी के प्रति मेरे मुँह से बुरे शब्द ना निकलें ।"

रामराज्य में न्याय सबों के लिए समान था । किसी को अधिक अभवा किसी को कम की बात ही नहीं थी । हर कोई निराटंक राजा से मिल सकता था और न्याय पा सकता था । एक दिन रात को एक कुत्ता रक्त सिक्त होकर श्रीराम के प्रासाद के सम्मुख खड़े होकर भूँकने लगा । लगता था, मानों वह अँतिम सांस ले रहा हो ।

राम नींद से जागकर कुत्ते के निकट आये और उसके सर को अपने हाथ से फेरते रहे । इससे उसकी सारी पीड़ा दूर हो गयी और वह आवेश में आकर बोलने लगा "हे राम, एक युवक ने बड़ी निर्दयता से मुझे मारा है, पीटा है । वह कोई काम नहीं करता । व्यर्थ घूमता- फिरता रहता है । मेरी आपसे प्रार्थना है कि उसे आप किसी बड़े मँदिर का धर्मकर्ता बनावें ।"

राम को उसकी प्रार्थना पर आश्चर्य हुआ और कहा "उसने तो तुम्हें हानि पहुँचायी है । तुमको तो मांगना चाहिये, उसे मृत्यु दंड अथवा कोई कोई कठोर दंड । अपकारी के लिए उपकार की प्रार्थना कर रहे हो । ऐसा क्यों?"

"पूर्व जन्म में मैं एक मँदिर का प्रमुख धर्मकर्ता और प्रधान पुजारी भी रहा । मैंने मँदिर की संपत्ति का अपहरण किया ।सब प्रकार के नीच कार्य किये । इसलिए इस जन्म में कुत्ता होकर पैदा हुआ हूँ । मेरी इच्छा है कि वह युवक भी अगले जन्म में कुत्ता होकर पैदा हो और नाना प्रकार की

यातनाएँ सहे । तभी मेरा प्रतिशोध पूर्ण होगा । इसीलिए मैंने आपसे उस युवक के लिए ऐसी प्रार्थना की । आपके पावन हस्तों के स्पर्श से मेरे सारे पाप धुल गये । मेरा जन्म धन्य हो गया । मुझे पूरा विश्वास है कि आपके स्पर्श से मेरा पुनःर्जन्म होगा और वह जन्म उत्तम व श्रेष्ठ होगा ।" कहकर कुत्ता मर गया ।

जब उस युवक को यह समाचार मालूम हुआ तो वह बहुत पछताया और उसने अपने को सुधार लिया । प्रश्चत्ताप की अग्नि में तपकर पुनीत हो गया ।

* * *

अश्वमेध याग पूर्ण हुआ । राम का शासन सुचारू रूप से चलने लगा । तब यम ब्राह्मण के रूप में वहाँ आये और कहा "राम, आप से एकाँत में चंद बातें करनी हैं । परतु हाँ, धयान रहे कि हम जब परस्पर बातें करते रहेंगे तब, कोई भी ना आये । अगर कोई आये तो उसका सिर काटा जाना चाहिये ।"

राम ने इसके लिए अपनी सम्मति दी और लक्ष्मण को बुलाकर पूरीं बातें समझायीं । उसे द्वार पर खड़ा कर दिया और रहस्य-मंदिर में यम के साथ चले गये ।

"राम, आप महाविष्णु हैं । अपने जिस कार्य की पूर्ति के लिए आपने अवतार लिया है, वह संपूर्ण हो गया है । सीता लक्ष्मी बनकर अपने मायके में, क्षीरसागर में आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं । आपके भ्राता शंख चक्र हैं । उनको लेकर आपको वहाँ आना होगा" यम ने निवेदन किया ।

उसी समय दुर्वास मुनि तीव्र गति से वहाँ आये और लक्ष्मण से कहा "मुझे अभी राम से मिलना है । तुमने इसकी अनुमति नहीं दी तो मैं शाप दे दूँगा कि रघुवंश का सर्वनाश हो ।"

रघुवंश को सर्वनाश से रक्षा करने के हेतु लक्ष्मण ने निर्णय कर लिया कि अपना सिर कटवा लूँगा और दुर्वास मुनि को अंदर जाने दूँगा । दुर्वास के आगमन का समाचार सुनाने के लिए स्वयं अंदर गया ।

जैसे ही लक्ष्मण अंदर पहुँचा तक्षण ही यम अदृश्य हो गये ।

राम ने अपने दिये हुए वचन के अनुसार लक्ष्मण का सिर काटने की आज्ञा दी । बड़ों

ने राम के दिये हुए दंड को लेकर दीर्घ चर्चाएँ की और निर्णय पर आये कि देश बहिष्कार भी सिर काटने के समान है, अतः लक्ष्मण को देश-वहिष्कार- दंड दिया जाए । उन्होने श्रीराम को भी अपना निर्णय सुनाया । लक्ष्मण ने यह सुना और सरयू नदी में कूदकर अपने अवतार की इतिश्री कर दी ।

सरयू नदी में लक्ष्मण के डूब जाने के बाद राम ने अपने भाइयों से पूरा विषय बताया और कहा कि लवकुश के राज्याभिषेक की तैयारियाँ की जाएँ । इसके लिए अयोध्यानगरी दिव्य रूप से अलंकृत की गयी ।

राम ने लवकुश का राज्याभिषेक किया और हनुमान को बुलाकर कहा "हनुमान, राज्य का पालन दीर्घ काल तक मैने किया है । अब मुझे विश्राम चाहिये । मैं रहूँ अथवा ना रहूँ, मेरी तो तीव्र इच्छा यही है कि तुम लवकुश के साथ रहो, उनकी देखभाल करो, उनको मार्गदर्शन दो ।राज्य की रक्षा का पूरा भार तुम्हें सौंप रहा हूँ ।मेरा बनकर अब तक रहते आये हो, भविष्य में उनका बनकर रहो । लवकुश को उत्तम शासकों के रूप में सुधारने का उत्तरदायित्व तुमपर है ।"

हनुमान हाथ जोड़कर मौन रह गया और सर झुका लिया । सरयू नदी जाने के लिए राम ने एक बड़े उत्सव का प्रबंध किया । उस दिन महोदय पर्वदिन था । मंगल ध्वनियाँ प्रतिध्वनित होने लगीं । ब्राह्मण वेदों का पठन करने लगे । राम पैदल सरयू नदी की ओर बढ़े । भरत ने उनके लिए श्वेत छतरी पकड़ी । ऊँची अट्टालिकाओं से

पुण्यस्त्रीयाँ पुष्पों की वर्षा करने लगीं। हनुम न म के पीछे-प ैन होकर चलने लगा। उसके मुख पर चिंता व्याप्त थी। उसे देखने पर लग रहा था मानों उसने सब कुछ खो दिया हो। उसकी मति मंद पड़ गयी थी। प्रजा को ज्ञात नहीं था कि राम सरयू नदी की ओर क्यों अग्रसर हो रहे हैं, इसलिए वे तरह-तरह से टिप्पणियाँ कर रहे थे। थोड़ी देर में जुलूस सरयू नदी तट पर पहुँचा।
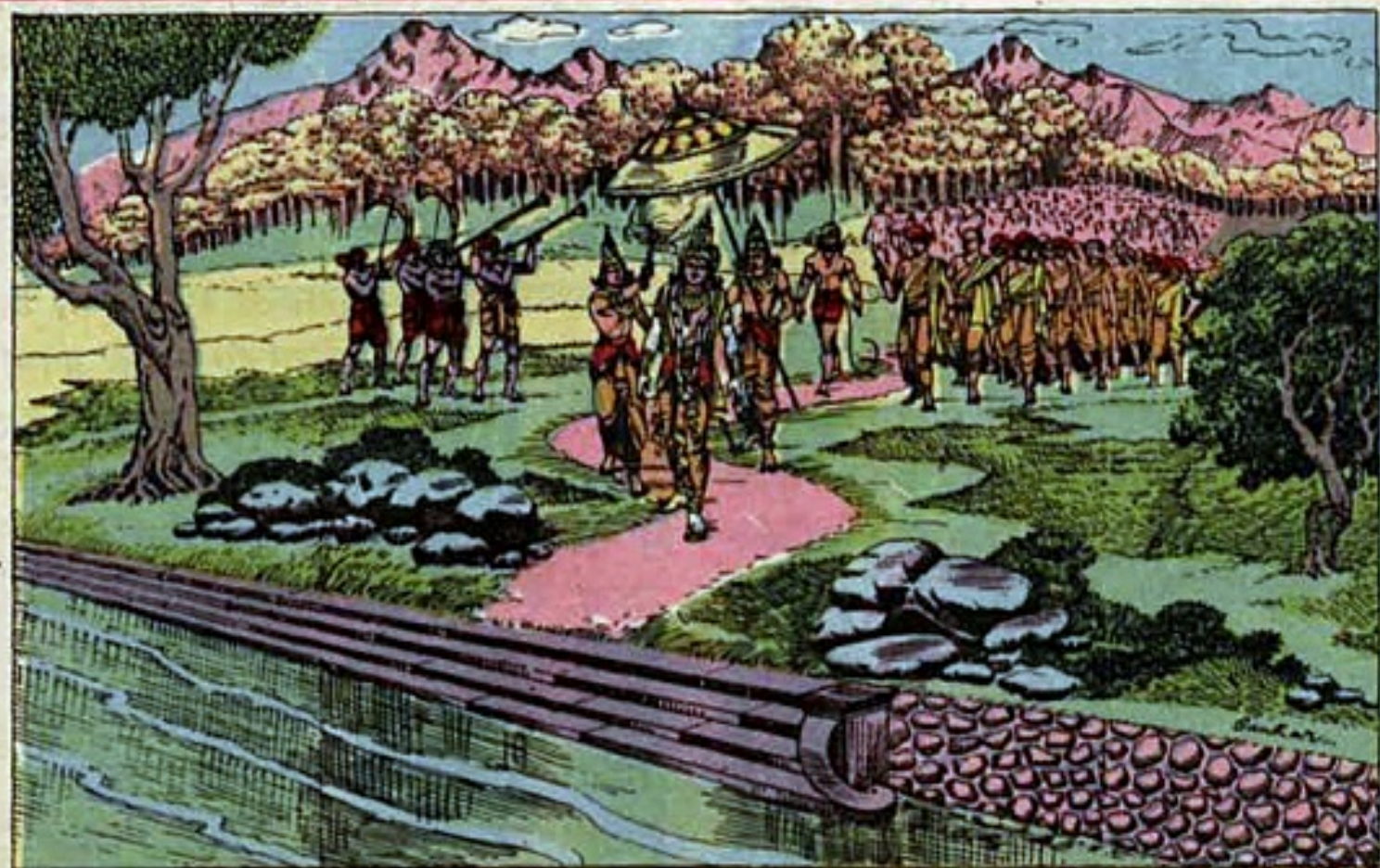
राम ने सरयू नदी में अपने पग रखे। भरत ने शंख फूँका। शत्रुघ्न ने कर्पूर जलाया और उसे चक्र की तरह घुमाया। ब्राह्मण ऊँचे सुर में सामवेद का पठन कर रहे थे। मंगलमय वाद्यों की ध्वनियों से दिशाएँ प्रतिध्वनित हो रही थीं। भरत, शत्रुघ्न भी नदी में उतरे और राम की भुजाओं के पीछे खड़े हो गये।

राम शनै शनैः नदी में आगे बढ़ने लगे। गहरे पानी में गये और अपना दायाँ हाथ उठाया। हथेली से अभय की मुद्रा प्रदर्शित करते हुए जनता को आशीर्वाद देने लगे। और कहा "आप सब आनंद से घर लौटिये। सुख व आनंद से चिरकाल तक अपना जीवन सार्थक कीजिये।"

हनुमान लवकुश के निकट खड़ा था। दुख से वह गद्‌गद् स्वर में बोला "श्रीराम, रुकिये। आपसे पहले मैं ही अपना प्राण त्याग दूँगा। आपके बिना मैं क्यों और किसलिए जीवित रहूँ।" अपना वक्षस्थल पीटता हुआ वह पानी में निकला जा रहा था तो राम अपनी नाक पर हथेली रखकर उसे मना करते हुए बोले "हनुमान, तुम चिरंजीवी हो। लवकुश को लेकर तुम शीघ्र यहाँ से चले जाना"। गंभीरता से उन्होने हनुमान को आदेश दिया। हनुनान शांत हो लवकुश को लेकर राजभवन लौट पड़ा।

राम सरयू नदी की गहराई में चले गये। पुनः दिखायी नहीं पड़े। श्रीराम के साथ भरत शत्रृघ्न भी नदी में निमज्जित हो गये। रामावतार समाप्त हुआ। क्षीरसागर में लक्ष्मण पहले से ही आदिशेष बनकर शय्या के रूप में शोभायमान थे। सीता उसपर आसीन होकर राम की प्रतीक्षा करने लगी। राम विष्णु के रूप में शेषशय्या पर आसीन हुए। भरत व शतृघ्न शंख चक्र

बनकर उनके हाथों में विराजमान थे। लक्ष्मी महाविष्णु के पैरों को दबा रही थीं।

* * * * *

एक दिन लवकुश सिंहासन पर बैठकर अपने माता-पिता का स्मरण करके रोये जा रहे थे। उनकी आँखों से अश्रुओं की धारा प्रवाहित हो रही थी। हनुमान ने उनको सांत्वना देते हुए कहा "तुम लोग रघुवंश की ज्योति हो। राज्य का शासन-भार तुम दोनों के कंधों पर है। तुम दोनों का यह विलाप अनुचित है। जब-जब तुम श्रीराम व सीता मैय्या को देखना चाहते हो, तब-तब मैं तुम्हें उन्हें दिखाऊँगा। देखो, वे मेरे वक्षस्थल में कितने सुख-शांति से निवास कर रहे हैं।" कहते हुए उसने अपना वक्षस्थल चीरकर दिखाया।

उसमें उन्होने देखा कि उनके माता-पिता मुस्कुरा रहे हैं और उन्हें प्रेम से देखते हुए आशीर्वाद दे रहे हैं। उन्हें देखकर लवकुश बहुत ही संतृप्त हुए।

लवकुश बड़े होकर राज्य-भार बड़ी ही कुशलता से संभाल रहे थे। पूरब में स्थित मणिपुरी तथा पश्चिम में स्थित मथुरानगरी को उन्होने अपनी उपराजधानियाँ बनायीं।

कुश शुभ के साथ मणिपुरी में और लव मथुरा में शोभा के साथ रहते हुए दोनों स्थानों की सुरक्षा कर रहे थे।

इतने में देश को एक बड़ी विपत्ति ने घेर लिया। राक्षसों से भी क्रूर घोरकलि नामक नरराक्षस ने देश पर आक्रमण कर दिया।

उसके साथ शक, कुषाण, पाषाण नाम के पहाड़ी जाति के तीन सेनाधिपति भी थे। वे उत्तरी दिशा से देश पर टूट पड़े। उनकी सेना के दुर्जन सिपाही पश्चिमोत्तर राज्य-भाग से जनता पर टूट पड़े और हाहाकर मचाया।

घोरकली के साथ-साथ कालकलि नामक एक नरराक्षस सहस्रों नौकाओं को लेकर कालकेय नामक समुद्री राक्षसों को साथ लिये समुद्र-मार्ग से देश पर आक्रमण करने निकल पड़ा। कालकलि की आज्ञा के अनुसार कालकेय राज्यों को लूटते थे और वहाँ की अपार संपत्ति अपने यहाँ ले जाते थे। वे अपने स्वस्थल कालकोटि द्वीप पर यह संपत्ति पहुँचाते थे।

पाएँगे और शत्रु के छक्के छुड़ा देंगे ।" उसके प्रोत्साहन से जनता के हृदयों से भय दूर हो गया । उनमें स्फूर्ति आ गयी । वे सारे के सारे योद्धा बनकर हनुमान के नेतृत्व में कालकलि से युद्ध करने निकल पड़े । हनुमान ने दोनों युद्ध क्षेत्रों में हज़ारों रूप लिये, हर स्थल पर हनुमान की तरह दिखता हुआ युद्ध करने लगा । वह 'साहसी आँजनेय' कहलाया गया ।

कुश ने घोर युद्ध किया और घोरकलि का अपने अग्निअस्त्र से अंत कर ड़ाला । रामसेना ने उसकी सेना को भगा दिया; उन्हें मार ड़ाला ।

लव ने कालकलि से युद्ध किया और उसे वरुणास्त्र से मार ड़ाला । रामसेना के

प्रजा भयभीत थी, अपने प्राण और संपत्तिकी रक्षा के लिए वे मार्ग ढूँढ़ रहे थे । थे । हनुमान जनता के बीच आया और समझाने का प्रयत्न किया कि केवल अपनी रक्षा का मार्ग ढूँढ़ना अनुचित तथा अवांछित है । उसने कहा, देश की रक्षा हमारा प्रथम कर्तव्य है । उसने जनता को अपने कर्तव्य का स्मरण दिलाकर उन्हें उत्तेजित किया । रामसेना के नाम पर उसने देश के नागरिकों को सैनिक बनाया और उन्हें प्रशिक्षण दिया । उनके धैर्य-साहस को जागृत किया ।

हनुमान ने जनता से कहा "श्रीराम से शासित राम-राज्य में संपूर्ण देशवासी रामसेना के अभिन्न अंग बन जाएँ तो वे किसी भी प्रकार की विपत्ति का सामना कर

योद्धाओं ने जहाँ-जहाँ कालकेय राक्षसों को पाया, वहाँ-वहाँ उन्हें मृत्यु की गोद में सुला दिया । हनुमान ने अपनी पूँछ से नावों को बांध दिया और उन्हें समुद्र में डुबो दिया, उन नौकाओं के साथ-साथ कालकेय भी मर गये ।

दो महान विजयों की प्राप्ति के बाद हनुमान ने जनता से बताया "राम से शासित रामराज्य में हर कोई लवकुश के भाई हैं । सब भाइयों को एक साथ रहना है, एक साथ चलना है । किसी एक का दुख, एक का कष्ट सब का दुख और कष्ट है ।दुख-सुख में हम सब समान भागीदार हैं" इस प्रकार देशवासियों को संबोधित करके, उन्हें प्रोत्साहित करके उनमें धैर्य भरते हुए हनुमान

ने देश की रक्षा की । शत्रुओं के लिए अब वह सिंह-स्वप्न बन गया ।

युद्ध समाप्त हो जाने के बाद उसने लवकुश से कहा कि अब मैं गंधमादन पर्वत पर चला जाऊँगा । उन दोनों ने इसकी सम्मति दी ।

लवकुश ने बहुत बड़े स्तर पर उसे बिदाई दी और गंधमादन पर्वत पर छोड़कर लौटे ।

हनुमान ने उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा कि रघुवंश की प्रतिष्ठा को स्थिर रखो; सुखी, संपन्न रहो; दीर्घ काल तक जीओ । उसने जनता को संबोधित करते हुए कहा "रामसेना बनकर सब एकता से रहोगे तो कोई ऐसा कार्य नहीं, जो तुम्हारे लिए असंभव हो । रामराज्य में सब के सब लवकुश हैं ।" इस प्रकार कहकर उन्हें अयोध्या भेज दिया ।

प्रजा ने हाथ जोड़कर हनुमान को प्रणाम किया । 'वीर हनुमान की जय' के नारे लगाये । प्रतिध्वनित हो रहे इन नारों के बीच में हनुमान तपस्या करने गंधमादन पर्वत पर चला गया ।

लवकुश और उनकी संतान ने रामराज्य की प्रतिष्ठा को चिरस्थायी रखा और राम को आदर्श मानकर अपना शासन चलाते रहे ।

हनुमान गंधमादन पर्वत पर तपस्या में लीन हो गया ।

* * * * *

हनुमान तपस्या में जब लीन था, तब एक बार उसकी तपस्या का भंग हुआ । उसने आँख खोलकर देखा तो उसने पाया कि पर्वत नाटे हो गये हैं । महावृक्ष, पौधों की तरह दिखने लगे । हाथी चूहे जैसे लगने लगे । उसने ध्यान से आकाश को निहारा । सप्तऋषिमंडल ध्रुव नक्षत्र से दूरी पर था । इससे वह जान गया कि युग परिवर्तित हो गया है ।उस समय त्रिकालज्ञ नारद वहाँ आये और बोले "यह द्वापर युग है । प्रथम पाद का आरंभ है । हनुमान, इस द्वापरयुग के चौथे पाद में तुम्हें राम के दर्शन होंगे ।" नारद यह कहकर चले गये ।

हनुमान पुनः तपस्या में लीन हो गया ।

कमाल का तैराक

बहुत वर्षों पहले समुद्री तट पर केरल राज्य का एक द्वीप, लक्षद्वीप की थोड़ी दूरी पर था । वह द्वीप पथ्थरों से भरा हुआ था, इसलिए खेती अथवा दूसरे उपयोगी कामों के लिए बेकार था । इसलिए उस द्वीप में रहनेवाले अधिकतर मछवे थे । उसी से उनकी जीविका चलती थी । अलावा इसके, वे पशुओं को पालते रहते थे । वहाँ के कुछ मछवे जहाज़ों में काम करने के लिए चले जाते थे । कुछ समुद्र के अंतराल में जाते और मोतियाँ के सीप ढूँढ़ लाते । उन्हें द्वीप के व्यापारियों को बेचते और पेट भरते थे ।

उस द्वीप के एक बूढ़े मछवे के बहुत-से बेटे थे । उनमें से अधिक मछली पकड़कर लाने के काम में अपने बूढ़े पिता की मदद करते थे । उनका पेशा भी यही हो गया था । एक दो ने वाणिज्य नौकाओं में नौकरी पा ली । उनमें सबसे छोटे लड़के का स्वभाव ही अन्यों से भिन्न था । मछलियों को तड़पते हुए मरना उससे देखा नहीं जाता था । बचपन में जब वह, उसके माता-पिता, और भाई मछलियाँ पकड़कर टोकरियों में ले आते थे, तो जब वह देखता कि कोई मछली जीवित है तो उसे उठाकर पानी में फेंक दिया करता था । कभी-कभी तो टोकरी में से आधी मछलियों को वह बचाता और पानी में फेंक देता था ।

उसके इस स्वभाव के कारण मछलियाँ पकड़ने के पेशें में वह सफल नहीं हो पाया । परंतु उसे समुद्र तथा मछलियों से अपार लगाव था । माँ-बाप उसे गाली देते रहते थे कि यह तो निकम्मा है, किसी काम के लायक़ ही नहीं । वह घंटों भर समुद्र के किनारे पर जाता और चुप बैठा करता था । समुद्र में तैरता था । वह भूमि से भी अधिक

रघुवर मिश्रा

समुँदर के अंदर कितनी ही विचित्रताएँ, रंग, और आकर्षणीय दृश्य देखता था । उसने लंबी अवधि तक समुँदर के अंदर ही रहने का अभ्यास किया । वह समुद्र के अंदर ही घूमता-फिरता था । वहाँ की रंग-विरंगी मछलियों, पेड़ों, पाँधों, तथा विचित्रताओं को देखकर उसे अपार आनंद होता था ।

जब वह बड़ा हुआ तो समुँदर में कूद जाता, उसकी गहगई में जाता और जितनी देर रह सके, रहता था । इतनी देर तक पानी के ही अंदर रह सकनेवाला उस द्वीप में कोई और नहीं था । इसलिए सबने उसका नाम रखा 'मछली मनुष्य' । वह सबेरे-सबेरे जाता और समुँदर में ही अपना समय बिताता था । अंधेरा होने के बाद ही घर लौटता था । उस दिन देखी हुई विचित्रताओं का सविस्तार वर्णन अपने भाइयों को सुनाता था । वह बताता कि समुद्र के अंतराल में, डूबे हुए जहाज़ हैं, उग आये हुए पौधे हैं, प्रवालों के शीर्षों पर भिन्न शाखाओं में विभजित लाल और सफ़ेद रंग की टहनियाँ हैं । अलावा इनके, पानी में मोती के सीप, नक्षत्र मछलियाँ, काँच जैसी मछलियाँ हैं, जिनके बारे में किसी ने कभी ना सुना, कभी ना देखा कितने ही ऐसे देखे जा सकते हैं ।

जब इन सबका बड़े चाव के साथ वह वर्णन करता रहता था, तब उसकेभाई समझते थे कि यह सचमुच पागल हो गया है । माँ को ड़र लगा कि कोई दुष्ट शक्ति इसपर हावी हो गयी है, तो तावीज़ बंधवाया । इतना सब कुछ करने के बाद भी उसके स्वभाव मेंकोई परिवर्तन नहीं हुआ । उल्टे उसकी ख्याति दिन-ब-दिन बढ़ने लगी । 'मछली मनुष्य' केनाम से उसे सब जानते और पहचानते थे । यह समाचार उस देश के राजा तक पहुँचा ।

राजा ने उसे एक बार अपने महल में बुलाया । जब वह राजा के दर्शनार्थ महल में गया तो उनकी सत्रह साल की बेटी भी उसके साथ थी ।

"सुना है, तुम समुद्र की बहुत गहराई में जा सकते हो, समुद्र में तैरनेवाला तुम्हारा जैसा फुर्तीला संसार भर में ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा । क्या यह सच है?" राजा ने पूछा ।

"मुझे दूसरों के बारे में कैसे पता चलेगा महाराज?" उसने कहा ।

"अच्छा, हम भी देखते है कि तुममें कितना सामर्थ्य है?" राजा ने कहा और अपनी निजी नौका में अपनी बेटी को भी लेकर उसके साथ समुद्र में चल पड़ा । समुद्र के बीच वह अपनी नौका ले गया और एक सोने के बरतन को पानी में फेंक दिया फिर कहा "जाओ और इसे ले आओ ।"

वह समुद्र में डूबा, नीचे गया, सोने का बरतन अपने हाथ में लिया और प्रवाल की एक टहनी को भी तोड़कर ले आया । उसने उस प्रवाल की टहनी राजकुमरी को भेंट में दी और सोने का बरतन राजा को देने ही वाला था कि राजा ने कहा "तुम्हीं इसे रख लो । इससे भी अधिकाधिक कठिनतम काम सौंपूँगा । करोगे?" राजा ने पुछा ।

"बताइये, हो सका तो अवश्य करूँगा" उसने जवाब दिया ।

"इस द्वीप के चारों ओर जो समुद्र है, उसकी गहराई में जाओ और मुझे बताओ कि वहाँ की विशेषताएँ क्या हैं?"

"इसमें तो बहुत समय लगेगा" उसने कहा ।

"मुझे मालूम है । जितना समय चाहते हो, लो । आवश्यकता पड़ी तो विश्राम भी करो । बिना इसकी विशेषताएँ जाने, मेरे पास मत आना" राजा ने कहा ।

"तब आप यहीं रहिये" कहते हुए

राजकुमारी की ओर देखा और समुद्र में डूब गया । उसके वापस लौटने में तीन महीने लग गये ।

"महाराज, हमारे द्वीप के नीचे तीन बड़े पर्वत हैं । उनके पथ्थर साधारण पहाड़ के पथ्थर से भी मज़बूत हैं । परंतु उनमें से एक पहाड़ का नाश होता जा रहा है ।" उसने कहा ।

"नाश हो रहा है, क्यों?" राजा ने पूछा ।

"उसके निचले भाग में अग्नि प्रज्वलित हो रही है । वह पथ्थर का नाश कर रही है । जिस प्रदेश में यह अग्नि सुलग रही है, वहाँ कोई पौधा या कोई मछली भी नहीं है" उसने बताया ।

राजा ने पुछा "पानी के नीचे अग्नि कैसे?"

"महाराज, यह साधारण अग्नि नहीं। यह बडवाग्नि है। उसे आप ठंडा नहीं कर सकते।" उसने कहा।

"हाँ, बडवाग्नि का नाम सुन चुका हूँ, लेकिन देखा नहीं। थोड़ी से अग्नि लाकर दिखा" राजा ने कहा।

"अग्नि लाना कैसे संभव होगा महाराज" उसने पूछा। "मैं कैसे बता पाऊँगा, यह तो तुम्ही को मालूम होना चाहिये" राजा ने कहा।

वह फिर से समुद्र के गर्भ में गया। अग्नि के समीप जाने का उसने प्रयत्न किया। उसके हाथ-पाँव जल गये। जले हुए बदन से वह नौका के पास आया और महाराज से बोला "अग्नि को ले आना मेरे लिए संभव नहीं हो पाया। लीजिये इसका यह सबूत" कहकर उसने अपने जले हुए हाथ-पाँव दिखाये।

"अब मैं तुम्हारी बातों का विश्वास करता हू। तुम सचमुच ही कमाल के तैराक हो" राजा ने कहा।

"इस बार अग्नि को बहुत निकट रहकर देखा है। महाराज, पहाड़ के बृहत भाग का उसने नाश कर दिया है। मुझे लगता है कि निकट भविष्य में द्वीप पर आपत्ति आनेवाली है" उसने कहा।

राजा ने उसकी बातों का पूरा विश्वास किया और द्वीपवासियों को आदेश दिया कि वे शीघ्र ही द्वीप को छोड़ दें। उनके रहने का इंतज़ाम भी किया। जब मनुष्य और पशु सब द्वीप को छोड़कर चले गये, तब इसके कुछ समय के बाद वहाँ भयंकर भूचाल हुआ और एक महीने के अंदर ही द्वीप का एक-एक भाग समुद्र में विलीन होता गया।

राजा ने 'मछली मनुष्य' को बुलाया और कहा "तुम्हारी शक्ति तथा सामर्थ्य के कारण हज़ारों प्राणी बच निकले। पूछो, क्या पुरस्कार चाहते हो?"

उसने राजकुमारी को देखा, पर जवाब कुछ नहीं दिया। राजा पहले ही जानता था कि वह राजकुमारी को चाहता है। उसने दोनों की शादी की और उन्हे अपने ही साथ रखा।

कुमुद के सद्गुण

युवती मालती शिवपुरी में रहती थी। एक दिन फूलों के लिए गाँव के बाहर के बगीचे में गयी। वहाँ, हठात् एक चोर उसके सामने आया और छुरा दिखाते हुए बोला "जो गहने तुमने पहन रखे हैं, वे सब मुझे दे दो। नहीं तो छुरा भोंक दूँगा।"

मालती के गले में सोने का एक गहना मात्र था। दोनों हाथों में सोने की चार चूड़ियाँ थीं। पैरों में चाँदी के पायल थे। अगर चोर को उसने वे गहने दे दिये तो इन्हें फ़िर से बनवाने में पता नहीं, कितने साल लग जाएँ। ज़िन्दगी भर उसे मेहनत करनी पड़ेगी। वह गहरी सोच में पड़ गयी कि क्या करूँ और क्या ना करूँ। तब अकस्मात् वहाँ एक युवक आया और चोर से जूझ पड़ा। चोर के पास छुरा था और युवक के पास कोई हथियार नहीं। फिर भी उस युवक ने चोर का सामना साहस से किया और उसे भगा दिया। मालती उसके इस साहस पर बहुत ही प्रसन्न हुई। वह तालियाँ बजाती रही और उसके साहस की प्रशंसा करती रही। फिर चोर के भाग जाने के बाद उसने उसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की।

उस युवक ने कहा "मेरा नाम कुमुद है। मैं बहुत-सी विद्याओं में प्रवीण हूँ। मेरे पिता बूढ़े हैं। वे सदा कहा करते हैं कि घर में ही रहा करो। बढ़ई का काम करके पैसे कमाओ। लेकिन मैं बाहर जाकर तरह-तरह के काम करता हूँ और खूब पैसे कमाता हूँ। अपने पिताजी की भी देखभाल अच्छी तरह से कर रहा हूँ।

हम दोनों के अलावा, हमारा इस संसार में कोई नहीं है। मैं पड़ोस के माधवपुर गाँव का रहनेवाला हूँ। लड़की हो, अकेली गाँव के बाहर क्यों आयी हो?"

"मेरा नाम मालती है। पिता के सिवा

मेरा कोई नहीं है ।उन्हें धन की बड़ी लालच है ।तरह-तरह के इत्र बनाकर बेचते रहते हैं । इत्र के लिए फूल मुझे ही लाने पड़ते हैं । इत्र भी मुझे ही बेचना पड़ता है । वे अधिक घूम-फिर नहीं पाते । मुझसे भी अधिक घूमना-फिरना नहीं हो पाता । अपनी लाचारी बताती हूँ, फिर भी मेरी बात वे अनसुनी कर देते हैं । मैं उनसे बताती रहती हूँ कि पापड़ बनाकर बेचेंगे । पर वे सुनते ही नहीं । वे कहते हैं कि इनसे पैसा ही क्या मिलेगा? मैं पूछती रहती हूँ कि पैसों की ऐसी क्या ज़रूरत? तो वे कहा करते हैं कि यह सब तेरी शादी के लिए । मुझे मालूम है कि वे झूठ बोल रहे हैं । मेरी शादी हो जाए तो यह आमदनी भी चली जायेगी, इसलिए मेरी शादी करने की भी कोशिश बिल्कुल नहीं करते । अच्छा हुआ तुमने आज मेरी रक्षा की, नहीं तो गहनों की चोरी हो जाने से मेरे पिता मुझे गाली देते ।" यों मालती ने अपना पूरा परिचय दिया ।

कुमुद उसकी दुख भरी कहानी सुनकर बहुत दुखी हुआ । वह बोला "पिता भगवान के समान है । उनके बारे में तुम्हारा इस प्रकार बातें करना तुम्हें शोभा नहीं देता । तुम्हारे पिता प्रयत्न ना भी करें, तो भी तुम्हारी शादी अवश्य होगी, निर्विघ्न होगी । सोने की पुतली लगती हो । तुम मुझे बहुत ही अच्छी लग रही हो । अगर तुम्हें कोई आपत्ति ना हो तो मैं तुमसे शादी करूँगा । मैं ऐसा प्रबंध करूँगा कि तुम्हें घर से बाहर निकलने की ज़रूरत भी नहीं पड़ेगी ।"

"ताली कभी भी एक हाथ से नहीं बजती । विवाह किसी एक की इच्छा से नहीं होती । एक दूसरे को चाहना आवश्यक है । मैं तुम्हें पसंद नहीं करती" कहकर मालती वहाँ से चली गयी ।

उस दिन से कुमुद हर दिन मालती के लिए उस गाँव में आया करता था । उसके ना चाहने पर भी उससे बातें करता और उसका कुशल-मंगल पूछा करता था । उसके लिए पेड़ों की ऊँचाइयों पर चढ़ता और फूल तोड़कर ले आता । उसे छोटी-मोटी भेंटें भी देता रहता था । फिर भी मालती को वह अच्छा नहीं लगा । उसके प्रति उसके मन में प्रेम नहीं जगा ।

कभी-कभी एक बूढ़ी मालंती के साथ फूलों के लिए आया करती थी । उसे इस बात का पता चल गया । उसने मालती से पूछा भी । लेकिन मालती ने स्पष्ट कह दिया कि मैं उसे नहीं चाहती । कुमुद से उसने यह बात बतायी और कहा "पोते, क्यों व्यर्थ उसके पीछे-पीछे चक्कर काटते रहते हो । वह तुम्हें बिलकुल नहीं चाहती है । अच्छा है, इस गाँव में भविष्य में मत आना ।"

"दादी, तुम उम्र में बड़ी हो, गुणों से अच्छी हो । क्या तुम बता सकोगी कि मालती मुझे चाहे, इसके लिए मुझे क्या करना होगा?" "तुमने साहस किया, उसकी प्रशंसा भी की, विविध प्रकार के पुरस्कार भी दिये । फिर भी वह तुम्हें नहीं चाहती । अब एक ही मार्ग है ।शायद तुम नहीं जानते हो, इसलिए तुम्हें बताती हूँ । सुनो । दया से भी प्रेम उत्पन्न होता है । कौई ऐसा उपाय ढूँढ़ो , जिससे वह तुमपर दया करे ।" यह कहकर वह बूढ़ी चली गयी ।

कुमुद ने इस बार एक दूसरी ही तरक़ीब सोची । फूलों के लिए पेड़ पर चढ़ा और जानबूझकर नीचे गिर पड़ा । वह घायल हुआ । मालती ने उसे यह कहकर दुतकारा कि अगर पेड़ पर चढ़ना नहीं आता तो चढ़ते ही क्यों हो?"

इसके कुछ दिनों के बाद जब एक सांप झाड़ियों के पीछे से आकर मालती को डसने ही वाला था तो कुमुद ने उसे बचाया । जब वह सांप की पूँछ को पकड़कर खींच रहा

था, तब सांप ने कुमुद को डस लिया । अगर मालती फ़ौरन वैद्य को ना बुलाती तो उसकी मृत्यु निश्चित थी । उसने जब आँखें खोलीं तो मालती ने कहा "अच्छा होता, वह सांप मुझे डस लेता । वैद्य के लिए इस तरह दौड़-धूप करने से बच जाती और यहीं पड़ी-पड़ी मर जाती ।"

बूढ़ी ने मालती की बातें सुनीं और उसे दूर ले गयी । उससे कहा "लड़का बहुत ही अच्छे स्वभाव का है । सुँदर भी है । तुम्हें वह बहुत चाहता है । अपने प्राणों पर खेलकर उसने तुम्हारी रक्षा की है । मेरी बात सुनो । तुम उससे शादी करोगी तो सुखी रहोगी ।"

"मैं तो उसे रत्ती भर भी नहीं चाहती" मालती ने बड़ी ही विमुखता से कहा ।

"इसका कारण क्या है?" बूढ़ी ने पूछा ।

"मेरे पिता को देखो । मुझसे हर तरह का काम करवाता है । इस बात का भी उसे ख्याल नहीं कि मैं आखिर एक लड़की हूँ । और इसके बाप हैं जो चाहते हैं कि यह घर पर ही रहे और बढ़ई का काम करे । अपने बूढ़े बाप की इच्छा की पूर्ति ना करके दूसरे गाँव में घूमनेवाले इस घुमक्कड़ से कैसे प्यार करूँ?"

बूढ़ी हँस पड़ी और बोली "अनावश्यक तुम अपने पिता के बारे में ग़लत सोच रही हो । उन्होने जो भी कमाया था, तुम्हारे गहनों के लिए था । तुम्हारी रेशमी साड़ियों और दहेज के लिए धन जमा कर रहा है । अगर तुम घर के ही अंदर बंद रहती तो इतना धन कैसे इकट्ठा कर पाता । अगर तुम काम नहीं करती तो तुम लोगों का गुज़ारा भी मुश्किल हो जाता । तुम्हारे पिता की तो यही इच्छा है कि तुम्हारी शादी किसी संपन्न और अच्छे लड़के से हो ।"

"ठीक है । मान लेती हूँ कि तुम सच कह रही हो । लेकिन कुमुद जैसे एक निर्धन से शादी करके पिताजी के दिल को दुखाना अच्छा नहीं होगा ना?" मालती ने कहा ।

दूसरे दिन बूढ़ी ने कुमुद को मालती के मन की बात बतायी । तब वह मालती के पास गया और बोला "तुम इस भ्रम में हो कि मैं अपने पिता की ठीक तरह से देखभाल नहीं कर रहा हूँ । एक बार उनसे मिलकर बात कर लोगी तो तुम्हारे सारे संदेह दूर हो जाएँगे ।"

मालती थोड़ी देर सोचती रही और फिर कहा "मैं कल ही तुम्हारे गाँव जाऊँगी, लेकिन तुम उस समय उस गाँव में नहीं रहोगे । शर्त मंजूर है?"

कुमुद ने उसकी शर्त को स्वीकार किया ।

मालती ने अपने पिता को यह समझाकर मना लिया कि पड़ोस के गाँव में इत्र की काफ़ी माँग है ? और बूढ़ी को लेकर कुमुद के गाँव गयी । दोनों तब कुमुद के घर गये तो उन्होने देखा कि वह घर इंद्रभवन जैसा था । महाराज की तरह आसीन प्रभावशाली वृद्ध व्यक्ति और कोई नहीं, कुमुद का ही पिता था । वहाँ घर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक रसोइया भी था ।

मालती इस वैभव को देखकर चकित हो गयी । उसने बूढ़े को अपने इत्र की विशाष्टता के बारे में बताया और पूछा "क्या घर में कोई नहीं है?"

बूढ़े ने बड़ी ही नीरसता से जबाब दिया "हाँ है, मेरा इकलौता बेटा । कुमुद उसका नाम है । बड़ा ही चंचल है । उससे कितनी ही बार बता चुका हूँ कि घर पर रहो, बढ़ई का काम करो, पर वह मेरी बात ही नहीं सुनता । चक्कर काटता रहता है । मेरी बात की परवाह ही नहीं करता ।"

बूढ़ी ने दख़ल देते हुए कहा "लगता है आप धनवान हैं । आपका बेटा घर में भी रहे तो उसे बढ़ई का काम करने की क्या आवश्यकता है? पाँव पर पाँव धरे आराम से रह सकता है ना?"

उसकी इन बातों पर व्यंग्यपूर्वक हँसते हुए बूढ़े ने कहा "बहुत खूब, अच्छी सलाह दी है तुमने? ऐसा सोचकर ही मैने अपने पुरखों की दी हुई संपत्ति को बरबाद कर दिया है । जब मेरा बेटा पंद्रह साल का था, तो हम एक झोंपड़ी में रहने लगे । चिकित्सा के लिए पैसों के ना होने से मेरी पत्नी की अकाल मृत्यु हुई । उसकी चिंता में मैं भी बीमार हो गया । तब से कुमुद स्वयं कमाने लग गया । इन पाँच सालों में हमने यह महल खरीदा है । नौकर भी हैं । पहले ही से मैं आराम से रहता था, इसलिए ये सुविधाएँ आवश्यक हो गयीं ।"

"आपका बेटा हमारे गाँव आया-जाया
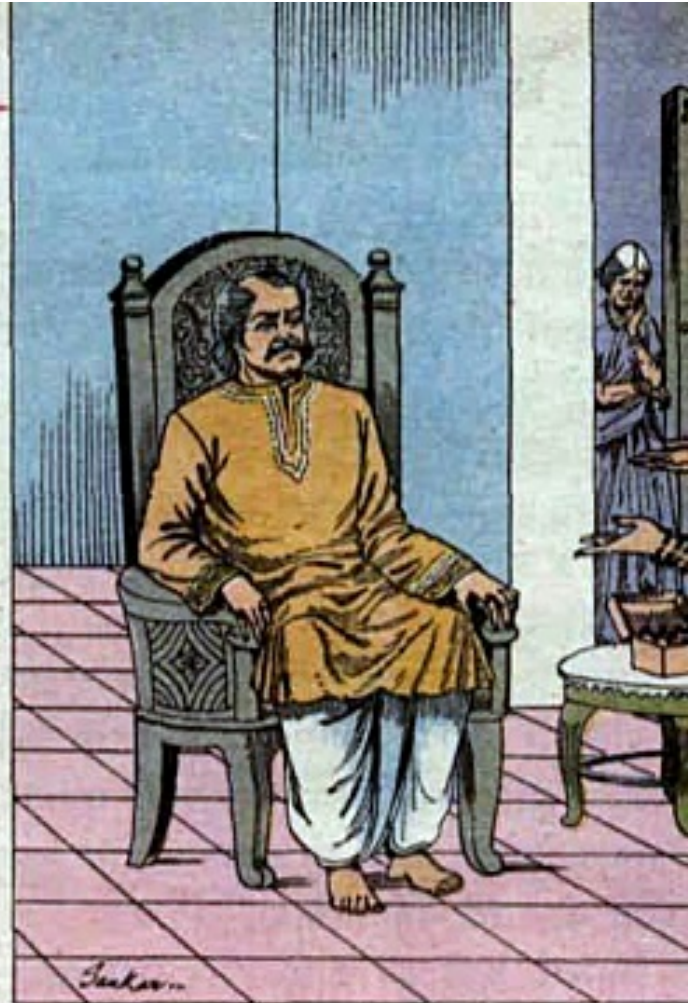
करता है, देखने में बहुत ही ग़रीब लगता है । यह कैसा पागलपन?" बूढ़ी ने पूछा ।

यह सुनते ही बूढ़ा ज़ोर से हँस पड़ा और बोला "यह कोई पागलपन नहीं । मैने ही उससे कहा था कि ऐसा बरतो । बचपन से ही आराम से रहने की आदतें ड़ालने लगे तो मेरा डर है कि मेरी ही तरह उसे भी दुख झेलने पड़ेंगे । वह भाग्यवान होता तो मैं अपनी जायदाद ना खोता । यह मेरा भाग्य है, जिससे वह थोड़ी ही सही कमा पा रहा है । उसकी कमाई सिर्फ़ मेरे लिए ही पर्याप्त होती है । वह निकम्मा है, इसीलिए अपने लिए कुछ कमा नहीं पा रहा है ।"

मालती ने उसे इत्र दिखाया तो उसने पूरा खरीद लिया । "तुम खुशनसीब हो,

इसीलिए उसकी अनुपस्थिति में आयी हो । वह यहाँ होता तो मुझे ख़रीदने ना देता । वह कहता, व्यर्थ का ख़र्च है । ताड़ी मंगाकर पीता हूँ तो वह कहता है, पीकर अपने स्वास्थ्य को क्यों खराब कर रहे हैं? मैं कहता रहता हूँ कि स्वास्थ्य खराब होने से जल्दी मर जाऊँगा । मेरा खर्च बच जायेगा, तुम्हारा ही लाभ होगा । लेकिन वह तो मेरी एक भी नहीं सुनता ।''

मालती और बूढ़ी वापस लौटीं । बूढ़ीने मालती से कहा ''कुमुद को आशा थी कि उसका पिता तुम्हारे सम्मुख उसकी प्रशंसा के पुल बांधेंगे । मुझे तो लगता है, कि तुम दोनों की शादी नहीं होगी ।''

मालती बूढ़ी को कोई उत्तर दिये बिना अपने गाँव आ गयी । सामने से आते हुए कुमुद को देखकर उसने कहा ''मैं तुम्हारे पिता से मिलकर आयी हूँ ।''

कुमुद हुसकर बोला ''मैं भी तुम्हारे पिता से मिला । वे हमारी शादी के लिए राज़ी हो गये ।''

''तुमने कैसे सोच लिया कि इस शादी के लिए मैं मान जाऊँगी'' मालती ने आश्चर्य से पूछा ।

''बताऊँ, कैसे मान लिया? तो सुनो । बूढ़ी ने जब तक उपाय नहीं बताया, तब तक मैं भी संदिग्धावस्था में ही पड़ा हुआ था । मेरे पिता से मेरे शत्रु भी मिलें तो मेरी स्थिति पर उन्हें दया आयेगी । तब भला तुम्हें मुझपर क्यों दया नहीं आयेगी? बूढ़ी ने अपने अनुभव के आधार पर कहा भी था कि दया से चाहत पैंदा होती है ।'' कुमुदने कहा ।

बाप होकर दूसरों से कभी भी अपने बेटे के बारे में अच्छा नहीं बताया । अपने प्रति शत्रु की तरह व्यवहार किया, फिर भी अपने पिता की सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा है कुमुद ने । अब उसकी अच्छाई का, उसके सद्‌गुणों का पता चला मालती को । विवाह के बाद भी अपनी पुत्री के सुखों के बारे में ही सोचनेवाले अपने पिता को उसने अब खूब समझ लिया । अब कुमुद पर उसे दया भी आयी और प्रेम भी उत्पन्न हुआ ।

इतना सब कुछ होने के बाद, दोनों पिताओं ने मालती-कुमुद का विवाह बिना किसी आडंबर के संपन्न किया ।

प्रकृति: रूप अनेक
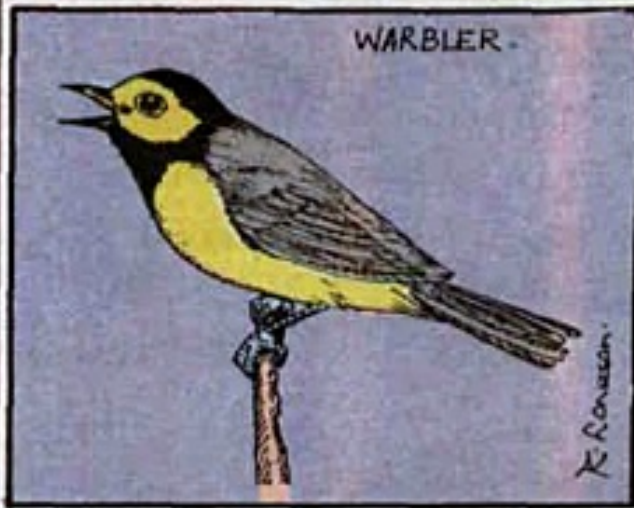
मुँडातुरै जंगल

तमिलनाडु में मुँडातुरै रिज़र्वड जंगलों ने हाल ही में सबका ध्यान आकृष्ट किया है। इसके दो मुख्य कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि वहाँ बाघों की संख्या अधिक हो गयी है। दूसरा कारण है, वहाँ छे सालों के पहले सिर पर पुच्छवाला कूजन करनेवाली चिड़िया (वारब्लर) का दिखना। तरह-तरह के कूजन करनेवाले पक्षी आते-जाते हैं, लेकिन सिर पर पुच्छवाला, कूजनकरनेवाला यह पक्षी दिखायी नहीं दे रहा है। मधुसूदन कट्टी भारतीय युवक हैं, जो कालिफोर्निया विश्वविद्यालय के विद्यार्थी हैं। वे इन पक्षियों के बारे में अनुसंधान कर रहे हैं। उनका कहना है कि इस पक्षी का कहीं दिखायी ना देना बड़ी विचित्र बात है। मद्रास के ही समीप के 'वेडंतांगल' में नाना प्रकार के पक्षी आकर आश्रय लेते है। रंग बिरंगे बगुले, कूजन की चिड़ियाँ, सैबेरिया बतख आदि यहाँ आते हैं, जिन्हे देखकर पक्षियों के प्रेमी बहुत आनंदित होते हैं। हमारे देश के पक्षियों के पुराने शरणालयों में से 'वेडंतांगल' एक प्रमुख शरणालय है।

तिमिंगलों की आत्महत्या

न्यूज़िलैंड नेल्सन के 'फेरवेल स्पिट' समुद्री तट पर यह विचित्र घटना घटी। साधारणतया समुद्र के गहरे पानी में उल्लास से घूम-फिरनेवाले ९९ तिमिंगल समुद्री तट पर आये। एक के बगल में एक सिमटने लगे तो उस क्रिया में सांस ना चलने की वजह से कुछ तिमिंगल मर गये। कुछ लोगों ने उनकी रक्षा करने के उद्देश्य से उन्हें पानी के अंदर ढ़केलना शुरू किया। फिर भी वे ४३ तिमिंगलों को बचा नहीं पाये। अब भी वैज्ञानिकों की समझ में नहीं आया कि झुंड के झुंड आये हुए इन तिमिंगलों ने आत्महत्या करने का प्रयत्न क्यों किया?

पक्षियों की गिनती

जब आप फ़ुरसत से हों तो क्या अपने प्रदेश के पक्षियों की गिनती कर पायेंगे? यही कहेंगे ना कि यह तो असंभव है। पर, पिछले नवंबर चौदह को हमारे देश के ५००० व्यक्तियों ने पक्षियों की गिनती करने का बीड़ा उठाया है। व्यक्तियों को ऐसे पक्षियों की सूची दी गयी जिसमें साधारणतया हमारे देश में पाये जानेवाले १७० पक्षियों के नाम हैं। हर एक को उनके देखे हुए पक्षियों की संख्या को उस सूची में भरना चाहिये। और यह काम एक ही दिन में होना चाहिये। पक्षियों के प्रमुख भारतीय शास्त्रज्ञ डा. अली की समृति में यह योजना बनायी गयी है। नवंबर १२ को उनका जन्मदिन है। इस दिवस के समीप की छुट्टी का एक दिन इसके लिए निर्धारित हुआ। हो सकता है, भविष्य में हर साल इस प्रकार की योजना अमल में लायी जाए।

Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

SUPER RUBBER
It's time to go back to school again. Time for text
books. Time for games. Time to meet old friends.
And make new ones. Time to start studying
again. Because there's so much to learn about
the world around you.
From all of us here at Chandamama, have a
great year in school. And remember to tell us
what you've learnt everyday, when you
come home from school !
THE
HANDAMAMA
OLLECTION
ARTIG1246

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मई, १९९४ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

PRAMOD BHANUSHALI

DEVIDAS KASBEKAR

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★१० मार्च '९४ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियाँ को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

जनवरी १९९४, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **कर्म से जीवन में बहार!**

दूसरा फोटो : **शिक्षा से जीवन में निखार!!**

प्रेषक : अशोक कुमार खंडेलवाल27, SUBHASHCHOWK INDORE-P.O, M.P.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

CHANDAMAMA (Hindi) March 1994 Regd. No. M. 5452